तीसरा अध्याय

उदय प्रकाश की रचनाओं में स्त्री, दलित एवं आदिवासी

तीसरा अध्याय
उदय प्रकाश की रचनाओं में स्त्री, दलित एवं आदिवासी

समाज में अगर हाशिएकृत लोगों की चिंता नहीं है तो साहित्य में भी उसका चित्रण नहीं होगा। इसलिए हम निसंदेह कह सकते हैं कि साहित्य सामाजिक संरचना की अभिव्यक्ति है। हाशिएकृत लोग कौन हैं? वे किसी धर्म विशेष से संबन्धित नहीं हैं। वे सभी प्रकार के मानवाधिकारों से वंचित होकर हाशिए पर छोड गया जनसमुदाय हैं। उसमें स्त्री, दलित, आदिवासी और अन्य अल्पसंख्यक लोग शामिल हैं। ये लोग सदियों से तिरस्कृत हो रहे हैं। लेकिन उनको केन्द्र में लाने का प्रयत्न समकालीन साहित्य की मुख्य प्रवृत्ति रही हैं। दूसरे शब्दों में कहा जाये तो समकालीन साहित्य हाशिएकृत जनता की आत्मपहचान एवं विद्रोह का साहित्य है।

आल्बेयर कामू ने कहा है - "लेखक का काम उन लोगों पर लिखना नहीं है जिन्होंने इतिहास बनाया है, बल्कि उन पर लिखना है, जिन्होंने इतिहास को जिया।"[1] अर्थात समाज व राजनीति में उपेक्षित या हाशिये के लोगों के बारे में लिखना या उनको प्रकाश में लाना हर एक साहित्यकार का लक्ष्य होना चाहिए। समकालीन रचनाकारों में इतिहास को जीतनेवाले लोगों के पक्ष में खडे होनेवाले

---

1. हंस - अक्तूबर 2005 - पृ. 35

रचनाकार हैं उदय प्रकाश। उनकी रचनाओं में स्त्री, दलित, आदिवासी एवं अन्य अल्प संख्यक जनताओं की विवशता एवं प्रतिरोधी चेतना हम देख सकते हैं।

3.1 स्त्री

यत्रनार्यस्तु पूज्यते रमंते तत्र देवतः नारी के महत्व और श्रेष्ठत्व का उद्घोष करनेवाली मनु की यह घोषणा आज हवा में चली गयी है। हम ऐसे समाज में जी रहे हैं जो पुरुष वर्चस्ववादी समाज है। पुरुष की प्रभुता की दृष्टि सामाजिक, राजनीतिक, पारिवारिक एवं अन्य क्षेत्रों में भी किसी न किसी रूप में हम देख सकते हैं। इस अवसर पर प्रभाखेतान का कथन सराहनीय है - "पितृसत्ता एक सामाजिक घटना है। हज़ारों साल से चली आई ऐसी व्यवस्था, जिसमें स्त्री की अधीनस्थता सर्वविदित है। पितृसत्ता ने स्त्री को अपने ज्ञान की वस्तु बनाया। उसेसाधन के रूप में प्रयुक्त किये।"[1] याने कि स्त्री अपने ऊपर होनेवाले अत्याचारों को चुपचाप सहती आ जाए तो समाज में पुरुष की प्रभुता और भी प्रबल हो जाएगी।

भारतीय समाज में पुरुष को महत्वपूर्ण स्थान देने के कारण परिवार का मुखिया आज भी पुरुष है। वह परिवार के सदस्यों पर जुल्म करता है। पुरुष ने स्त्री जीवन उसकी कार्यशैली और उसकी सत्ता को निर्धारित किया। लेकिन पुरुष वर्चस्ववादी समाज को यह देखना चाहिए कि स्त्री भी पुरुष की तरह मनुष्य है,

---

1. प्रभा खेतान - उपनिवेश में स्त्री : मुक्ति का काम - पृ. 39

उसको भी जीने का अधिकार और सामाजिक हैसियत है। प्रजनन के कार्य में उनकी भूमिका बहुत बडी है। गर्भधारण से लेकर संतान को जन्म देने तथा उसके लालन पालन का कार्य भी करती है। यह उनकी मात्र खासियत ही है। गुप्त जी नर नारी की तुलना करते हुए स्पष्ट करते हैं कि 'नर' शब्द एक एक मात्रा का बना है तो नारी शब्द दो-दो मात्राओं से बना है। तात्पर्य यह है कि दो मात्राओं में एक तो उनकी दया एवं करुणा, दूसरी मात्रा उनकी मातृत्व को सूचित करती है। स्त्री में सब कुछ हासिल करने की ताकत है। यह शक्ति आज सभी कार्य क्षेत्रों में देखी जा रही है जैसे दफ्तरों, कालेजों एवं विश्वविद्यालयों में, राष्ट्रपति के पद में आदि। इसी शक्ति को आज स्त्री पहचान कर जहाँ अपना अधिकार दबाया जा रहा है वहाँ उसके प्रति विद्रोह करने लगी है। वह है स्त्री विमर्श। यह तो दुनिया की आधी आबादी के स्वत्व से जुडा हुआ मुद्दा है।

उदय प्रकाश ने अपनी रचनाओं में स्त्री को मुख्य स्थान दिया। इसका कारण एक स्त्री ने ही उनका जीवन बचाया। अगर उसे स्त्री ने उसे बचाया नहीं तो आज उदय प्रकाश नहीं होंगे। उदय प्रकाश कहते हैं - "....सोन नदी के जल में मेरी वह अंतिम छटपटाहट अमर हो जाती। मृत्यु के बाद। लेकिन नदी के घाट पर कपडे धो रही धनपुरिहाइन नामक स्त्री ने इसे जान लिया। नदी की धार में तैरकर, खोजकर, उसने मुझे निकाला और जब मैं उसके परिश्रम के बाद दुबारा जिंदा हुआ, तो इतना आश्चर्य हुआ कि वह रोने लगी। ....तब से मैं स्त्रियों को बहुत चाहता हूँ। सिर्फ स्त्रियाँ जानती है कि किसी जीव को जन्म या पुनर्जन्म कैसे दिया

जाता है?"[1] इसलिए उदय प्रकाश ने स्त्री के विभिन्न रूप, उसकी यातनाएँ एवं संघर्षों को स्त्रीवादी दृष्टि से प्रस्तुत किया।

3.1.1 स्त्री के विभिन्न रूप

हमारे जीवन पद्धति में नारी को महत्व एवं संस्कृति के विकास में अहम भूमिका है। वह माता, बेटी, प्रेयसी, प्रेरणा श्रोत, तपस्या की मूर्ति आदि बनकर समाज एवं परिवार की उन्नति में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही हैं।

3.1.1.1 माता

भारतीय संस्कृति में 'माँ' को प्रमुख स्थान है। 'माँ' केवल जननी ही नहीं पालक भी है। अर्थात मानवीय संवेदना की दृष्टि से 'माँ' शब्द सबसे ऊँचा स्थान रखता है। नारी के विविध रूपों का अंकन करते हुए उसके मातृत्व रूप की महत्ता पर प्रकाश डालकर डॉ. राधाकमल मुखर्जी ने कहा है - "Between the women of the family as a mother, wife or sweet heart and the mother of the universe a community of attributes is established by religion, art and romance. The universe itself appears to be the mother, giving charm, energy and fertility to women and human conjugation is envisaged as the same process of devine conception and impregiation which has created the universe out of the dark fatherless womb of

---

1. उदय प्रकाश - ईश्वर की आँख - पृ. 13

eternity."[1] अर्थात स्त्री में करुणा एवं कोमल भाव भरपूर हैं, वह प्रजनन में महत्वपूर्ण भूमिका आदा कर रही है। याने कि घर एवं विश्व की शक्ति है स्त्री।

उदय प्रकाश 'माँ' के प्रति गहरा लगाव रखनेवाले हैं। माँ से ही पेइन्टिंग एवं कविताएँ करना सीख लिया। वे बार-बार कहते हैं - अम्मा कितनी अच्छी है दुनिया में।"[2] इस विचार वे अभिव्यक्ति देते हैं-

"अपने गाँव में मेरा आना
एक अजीब से वाक्य के माध्य में हुआ था
वह वाक्य जिसके द्वारा मैं पृथ्वी पर संभव हुआ
उसमें कोई क्रियापद नहीं था
न कोई कर्ता, न सहायक क्रिया, न अंत में कोई खडी पाई।"[3]

उदय जी माँ की महत्ता को अपनी भाषा के ज़रिए इससे भी बढकर कैसे प्रस्तुत करेंगे? हर एक व्यक्ति इस दुनिया में माँ शब्द के साथ जन्म लेता है। जन्म से लेकर उनके हर एक कदम पर माँ का सहारा है। आज माँ की स्थिति क्या है? यह भी सोचने का विषय है। उदय जी कहते हैं कि हम 'माँ' शब्द न कोई कर्ता, न सहायक क्रिया और न अंत में कोई खडी पाई के साथ लिखते हैं। वह ज़िंदगी भर घरवालों एवं बच्चों की भलाई के लिए लड रही है। लेकिन अंत में उनकी सहायता के लिए कोई भी नहीं है। यह आज का सच है।

---

1. Radha Kamal Mukerjee - The Horizon of Marriage - P. 177
2. उदय प्रकाश - अरोबा-परेबा - पृ. 98
3. उदय प्रकाश - एक भाषा हुआ फरती है - माँ - पृ. 95

उदय जी अपनी माँ की मृत्यु के बाद उससे उत्पन्न शून्य को सह पाने की स्थिति में नहीं थे। यही सच व अपनी रचनाओं में उजागर करते हैं। उनके मुताबिक - "....जब माँ की मृत्यु हुई, मैं उस शून्य को सह पाने की स्थिति में नहीं था। दुबला-पतला या चिडचिडा था और संभवतः बहुत अधिक संवेदनशील था। मैं उसी दिन मर जाना चाहता था। ....मुझे लगता है कि मैं कई वर्षों तक अपनी छोटी बहन को अकेला न होने देने के लिए जीवित रहा था।"[1] अर्थात माँ ही उनकी शक्ति थी। उदय जी साफ-साफ बताते हैं कि जब ज़िन्दगी में अकेलेपन और अफ़वाहों से घिरा हुआ समय था तब माँ की स्मृति ही उसे स्वांत्वना या आश्वास देती है। उन्हीं यादों से वे कहते हैं-

"....आज तक
जब भी घिरता हूँ मैं अंधेरे और अकेलेपन में अपनी जर्जरता
के साथ
हर बार पता नहीं कहाँ से चला आता है वही पहला वाक्य
मेरी ओर अपने व्याकुल हाथ बढाता हुआ।"[2]

किसी भी प्रकार की समस्याएँ, अकेलापन और अन्य विषमताओं से उलझनेवाले हम जैसे साधारण लोगों के मन में भी माँ की याद सबसे पहले आती है। क्योंकि वह करुणामय है। उनका सुरक्षा कवच हमारे चारों ओर है। दूसरे शब्दों में कहा जाये तो स्नेह और वात्सल्य का अंतिम रूप है माँ।

---

1. उदय प्रकाश - ईश्वर की आँख - पृ. 15-16
2. उदय प्रकाश - एक भाषा हुआ फरती है - माँ - पृ. 96

अपनी कहानी 'मूँगे, धागा आम का बौर' में माँ की मृत्यु के बाद घर की बेहालत का चित्रण है। माँ ही परिवार को परिवार बनाती है। इसलिए घर में सब खुशी में रहते हैं और घर में सन्नाटा नहीं होगा। उदय जी माँ की मृत्यु के उपरान्त की स्थिति पर प्रकाश डालते हैं। "अगर माँ होती तब भी या घर में एसा सन्नाटा नहीं होता तब भी क्या हम इतने ही अलग अलग होते। एक बहुत घिसा पिटा वाक्य याद आ रहा था सब लोग धागा टूटते ही मूँगे की तरह अलग-अलग छिटक गये। हम मूँगे थे। माँ धागा थी। जो टूट गयी।"[1] अर्थात हर एक घर की शक्ति वहाँ की स्त्रियाँ हैं विशेषकर माँ। माँ प्रकृति के हर ऋतु से परिचित है। प्रकृति एवं स्त्री दोनों पूरक हैं। प्रकृति में जो बदलाव आता है वह स्त्री में भी होता है। स्त्री ही पुरुष से ज़्यादा प्रकृति को जानती है। घर के आसपास हरे भरे बनाने में स्त्री का हस्ताक्षेप बहुत बडा है। उदय जी अपनी माँ की याद में इसकी ओर भी इशारा करते हैं - "...माँ होगी तो इस खेत में गेहूँ के पौधे रहे होंगे।"[2] याने कि गेहूँ, पौधे सब उनकी माँ ही सींचती थी लेकिन माँ की मृत्यु के उपरान्त घर एवं आसपास की हरी-भरी प्रकृति का रंग गायब हुई। सारे करिश्मे खत्म हो गये थे। अमरुद के पेडों में अब फल नहीं आते। माँ ही घर एवं परिवार को जीवन्त बनाती है।

उदय जी के अनुसार माँ का अर्थ दुनिया भर के समस्त शब्द कोश में है। लेकिन व्याकरण ने उसे समूचे वाक्य का दर्जा नहीं दिया। इसका कारण उदय जी खुद एवं हम ऐसे पाठकों से इस तरह पूछते हैं-

---

1. उदय प्रकाश - अबूतर-कबूतर - मूँगा, छागा, आम का बौर - पृ. 15
2. वही - पृ. 16

"दुनिया की सभी भाषाओं के सभी शब्द कोशों में
मौजूद था वह शब्द
लेकिन किसी भी व्याकरण ने उसे
एक समूचे वाक्य का दर्जा नहीं दिया था
आप बताएँगे क्यों?"[1]

इस प्रश्न का उत्तर देना हमारा दायित्व है। 'माँ' शब्द का अर्थ एक शब्द या समूचे वाक्य में परिभाषित करना मुश्किल है। माँ शब्द की व्याप्ति वाक्यों से भी परे हैं। अपने अक्षय वात्सल्य के कारण माँ कठोर से कठोर कष्ट, अत्याचार और अपमान सहकर भी सन्तान-हित में लगी रहती है। 'माँ' की करुणा, सहृदयता एवं क्षमा जैसे भावों में तैरनेवाले हम जैसे लोगों के सामने आज की माँ की दारुण स्थिति को दर्शाया जाता है। उदय जी 'मौसाजी' कहानी में हमारे सामने ऐसा एक दृश्य पेश करते हैं। 'मौसाजी' अपने तीन बच्चों से तिरस्कृत माँ है। फिर भी वह अपने बच्चों से प्यार करती है। आज भूमण्डलीकरण के इस युग में मौसाजी जैसी माँ हमारे बीच में जी रही है। इसी वजह से उदय प्रकाश जैसे समकालीन रचनाकार ने मौसाजी जैसी माँ को रचना के केन्द्र में लाने का प्रयास किया है। मौसाजी अपने बच्चों से तिरस्कृत होने पर भी समाज से कहती है - "उनके तीन लडके श्रवणकुमार है। बिना, मौसाजी की आज्ञा के वे कोई भी काम नहीं करते। छोटी-मोटी घरेलू बात भी होती है तो जरूर चिट्ठी लिखकर उनकी राय पूछते हैं। पोता-पोती हो तो मौसाजी ही उनके नाम सुझाती है। उनके बेटी भी उन्हें मौसाजी कहते हैं।"[2] हर माँ-

---

1. उदय प्रकाश - एक भाषा हुआ करती है - माँ - पृ. 96
2. उदय प्रकाश - दरियाई घोडा - मौसाजी - पृ. 38

बाप विशेषकर वृद्धजनों का सपना इस तरह है कि घरवाले अपने उपदेश एवं सम्मान करें। हर कदम पर उनका सलाह-मशवरा-ले। कहानी में वास्तविकता तो और कुछ है। मौसाजी का बडे लड़के को महेन्दर आठवें दर्जे में कई बार फेल होने के बाद होमगार्डस की ट्रेनिंग में भरर्ती हो गयी या और सबसे छोटा नरेंदर कालेज तक तो पहुँच गया था। लेकिन पढने लिखने में उसकी दिल्चस्पी कम ही थी। वह दिन भर आवारागर्दी करता था और रात में जुए के अड्डे में बैठकर ताल के पैसे वसूलता था। तीनों लडके मौसाजी से बहुत बुरा सलूक करते थे और कभी उनकी सहायता नहीं करते। आज अनेक बेटे-बेटी इस प्रकार के हैं कि बुढापे में अपने माँ-बाप का नफरत करते हैं। वे अपनी ज़िन्दगी को संभालने के लिए रिश्ते-नाते विशेषकर बूढे माँ-बाप की उपेक्षा कर विदेशों में चले जाते हैं। उस समय माँ अपने बच्चों की स्मृति में जी रही है इस अवसर पर यदि बीमार हुई तो पडोसी या आसपास के लोग उनको आस्पताल में ले जाते हैं इलाज कराते हैं। वास्तव में जब वह माँ होश में आती तो कहती है कि अपने बच्चे ही उसे आस्पताल ले गये और उन्होंने ही इलाज का सारा इन्तज़ाम करवाया। उदय जी ने मौसाजी के द्वारा इस सत्य को पेश किया है कि जब मौसाजी बीमार पडी तब उसके किसी लडके ने उन्हें झाँक तक नहीं देखा। पछीतटोला के ही लोग उन्हें खटोल में उठाकर आस्पताल ले गये। उन्होंने ही उनका इलाज करवाया। लेकिन ठीक हो जाने पर मौसाजी कहने लगी है कि उनके लडके महेंदर को जैसे ही पता चला कि मौसाजी बीमार है, वह घबडा गया। उसने तुरन्त आस्पताल के बडे डॉक्टर को फोन किया। डॉक्टर भागे-भागे आये और कार में मौसाजी को आस्पताल ले गये। महेन्दर फोन पर फोन

करता रहा। चिंता के मारे वह दूसरे जब अपने दफ्तर नहीं पहुँच तो बिडलाजी ने तफतीश की। जैसे ही उनको पता लगा कि मौसाजी बीमार है और आस्पताल में भरती है। उन्होंने भी बडे डॉक्टर को फोन किया.... अगर बीमारी डाक्टरों के बस में न हो तो वे साफ साफ बता दें। ...विदेश भेज सकते हैं। डाक्टरों ने जी जान लगा दिया। पाँच दिन में ही मौसाजी चंगे हो गये।"[1] इस तरह हर माँ अपने बच्चों की निंदा पर करुणा के आँसू बहाती है। वृद्धावस्था में हर माँ-बाप अपने बच्चों एवं उनके परिवार के साथ जीना चाहता है। लेकिन वे उसे मानते ही नहीं। इस दर्दनाक स्थिति तक पहुँचने के पहले हर माँ-बाप को समझना चाहिए कि बुढापे में भी किसी चारा की जरूरत होता है। वे अपने ईद-गिर्द एक झूठा संसार का निर्माण करते हैं, वह अंतिम सच भी नहीं है। उदय प्रकाश कथावाचक होकर मौसाजी को समझाते हैं - "....आप जहाँ जिस हालत में रहते हैं, उसे जानिये। उसे समझने की कोशिश कीजिए। आखिर अपनी औकात का अंदाजा तो आदमी को होना ही चाहिए। अगर आप अपनी स्थिति को ही नहीं पहचानेंगे तो पूरी जिंदगी गलत हो जायेगी। आपको अपने लिए कुछ वास्तविक ढंग से सोचना चाहिए। हो सकता है आगे चलकर हालत बदतर हो जायें। मौसाजी आप एक सीधे साधे गरीब आदमी है जिसके पास मेहनत की आखिरी पूँजी भी नहीं बची। आप एक बेहद गये गुज़रे बूढे आदमी है। अगर लडकों के मन में मकान के लिए कोई लोभ जागा तो आप फुटपाथ पर भीख माँगते नज़र आयेंगे। मौसाजी होश में आइये।"[2] उदय प्रकाश जी की यह समझौता

---

1. उदय प्रकाश - दरियाई घोडा - मौसाजी - पृ. 40
2. वही - पृ. 40

एक मौसाजी के लिए नहीं दुनिया भर के सभी मौसाजियों के लिए है। बुढापे के पहले हर माँ-बाप की अपने भविष्य के लिए कुछ पैसा या संपत्ति को संभालकर रखना चाहिए। क्योंकि वर्षों से मेहनत करके मिली अपना सारी दौलत वे अपने बच्चों को देते हैं। लेकिन बच्चे संपत्ति छीनकर उसे कहीं पर फेंक देते हैं। हर बच्चे को महाभारत के शांति पर्व पर ध्यान देना उचित है। शांति पर्व में कहा गया है कि

नास्ति मातृसमा छाया नास्ति मातृसमा गति
नास्ति मातृसमा त्राण नास्ति मातृसमा प्रिया।।

अर्थात माँ जैसी कोई छाया नहीं, उनके बराबर कोई सहारा नहीं, रक्षक के रूप में कोई बराबरी नहीं कर सकता और माँ समान कोई प्रिय नहीं हो सकता है। यह भी देखना चाहिए कि हमारे धर्म ग्रन्थों में हर समाज की भलाई की चिंता मात्र है।

उदय जी ने केवल माँ की नफरत करनेवाले बच्चों का ज़िक्र मात्र नहीं किया, अपनी माँ को सबकुछ माननेवाली युवापीढी का चित्रण भी किया। इस रिश्ते से जुडी हुई कहानी है 'थर्ड डिग्री'। यह कहानी सुरेश के घर से संबन्धित है। सुरेश के अलावा माँ के दो और बेटे भी थे। लेकिन पिता की मृत्यु के उपरान्त बूढी और बीमार माँ को उसके बडे भाईयों ने भगवान भरोसे छोड दिया था। भाईयों के मन के विचार उदय प्रकाश यों व्यक्त करते हैं - "...माँ तीनों भाइयों की सम्मिलित जिम्मेदारी थी। जिसका बोझ उसके शेष जीवन और अंतिम संस्कारों तक तीनों भाइयों में बराबर बाँटना था। वे माँ को अलग किसी ऐसे मकान में रखने के पक्ष

में थे। जिसका किराया और माँ का खर्च तीनों भाई मिलकर उठाएँ।"[1] अर्थात आज की पीढी अपने माँ-बाप को अपने साथ नहीं रखते उसके लिए अलग मकान किराये पर लेती है। बच्चे उनके लिए खर्च एक साथ करते हैं। 'थर्ड डिग्री' में सुरेश ऐसा बेटा है उनके मन में अपनी माँ से प्यार है इसलिए वह सोचता है - "....अगर अकेले में, माँ के रक्त में शुगर बढ गया। उन्हें ठंडे पसीने आने लगे और वह बेहोश हो गई और उन्हें फौरन इनसुलिन का इंजक्शन लगवाना पडा तो ऐसा कौन करेगा?"[2] यही चिंता हर एक बच्चे में होना आवश्यक है। इस विचार के साथ सुरेश ने माँ को अपने साथ लिया, उसकी सहायता दी और शादी के बाद भी वह अपनी पत्नी राजश्री से अपनी माँ का पक्ष लेकर लडता रहा। कई बार सुरेश को पता चलता है कि हर माँ अपने बेटे-बेटी के साथ उनके प्रेम के साथ जीना चाहती है। बुढापे में स्त्री परावलंबी होती है। उदय जी इसका खुलासा यों करते हैं - "हर माँ अंततः एक स्त्री होती है और हमारे समाज में चूँकि स्त्री की दिशा अभी भी शोचनीय है और ज़्यादातर वह परावलंबी है।"[3] परावलंबी होकर जीना कठिन है, फिर भी बुढापे में शारीरिक स्वास्थ्य एकदम बिगड जाता है। इसलिए वह अनजाने ही परावलंबी होती है।

'थर्ड डिग्री' कहानी के द्वारा माँ और बहु के बीच का झगडा और झगडा के बाद दोनों के बीच का करुणामय भाव आदि का विस्तार हुआ है। यह भाव स्त्री

---

1. उदय प्रकाश - पॉल गोमरा का स्कूटर -थर्ड डिग्री - पृ. 70
2. वही - पृ. 70
3. वही - पृ. 71

मन की विशालता ही है। सुरेश की पत्नी लेबर रूम में ही दो दिन से पडी हुई है। और शायद डिलीवरी सीसेरियन करनी पडेगी। सुरेश जब आस्पताल पहुँचा तो लेबर रूम से राजश्री के चीखने और रोने की आवाज़ें उठ रही थी। सुरेश ने आश्चर्य से देखा कि अचानक माँ का चेहरा धुँधला पडा, वहाँ पीडा की एक आकस्मिक परछाई घिरी और वह भी हिचकियाँ लेकर रोने लगी। यह है स्त्री का मन। दूसरों को दुःख से अपने को जोडती है और उनकी वेदना अपनी वेदना समझती है। उदय जी हमारे ध्यान इसकी ओर खीचते हैं - "...इतने दिनों से एक दूसरे के खिलाफ एक अप्रकट लडाई में मुब्तला थी, वे अचानक एक दूसरे के साथ हो गयी थी।"[1] यह सिर्फ स्त्री का ही गुण है।

'रक्कू' नामक कहानी में नियति की क्रूर विडम्बनाओं से आहत एक गरीब माँ और उसके छोटे बच्चे की कथा है। कहानी में कथावाचक अपनी पत्नी समेत एक तंग कमरे में रहा करता था। वहाँ एक नौकरानी आया करती थी - नाम है - माया। उसका छोटा बच्चा था रक्कू। माया जब बाथरूम में कपड़े साफ कर रही होती या रसोई में बरतन तो रक्कू लेखक के टांगे के साथ चिपक कर खडा हो जाता था। सिक्के माँगने का उसका यही तरीका था। स्वाभिमानी माया उसे डॉटती है और कहती है - "किसने सिखा दिया भिखमाँगा? लौटा बाबू जी के पैसे।"[1] पैसों की आवश्यकता होने पर भी अपने बच्चों को भीख माँगना वह चाहती ही नहीं हर

---

1. उदय प्रकाश - पॉल गोमरा का स्कूटर - थर्ड डिग्री - पृ. 75
2. संग्रथन 2010 - पृ. 15

माँ भी इस प्रकार है। बच्चों को संतुष्ट बनाये रखने में माँ भीख माँगती है, बरतन माँजती है अन्य जगहों में नौकरानी होकर काम करती है फिर भी अपने बच्चों के उज्वल भविष्य की चिंता उन्हें जीने की प्रेरणा देती है। एक दिन सारे सिक्के अपनी मुट्टी में समेटकर कथावाचक ने रक्कू की जेब में भर दिया। और वह पान की दूकान की ओर चला। वहाँ लेखक पान की दूकान वालों से बात कर रहा था। तब रक्कू के साथ माया वहाँ आयी। उसने टोफियाँ खरीदी और वह खुशी के साथ निकल गई। रक्कू ने उसे देखा और मुस्कुराया तब लेखक सोचता है - "....उसी वह मुस्कुराना सिर्फ मेरे लिए होती थी। एक तरह से लजाता हुआ धन्यवाद।"[1] अचानक सडक पर दुर्घटना हुई। उस दुर्घटना में रक्कू मरा पडा था उसका शरीर सडक पर चिपटा था। माया उस टयर के सामने पत्थर की मूर्ति सी खडी थी जिस टयर से रक्कू का दारुण अंत हुआ था। विधि की निष्ठूर विडम्बना से हुई गरीब माँ की त्रासदी की कहानी है 'रक्कू'। पति से उपेक्षित माया, सुशीला और स्वाभिमानी थी। दूसरों के घर पर काम करके अपने बच्चे का पालन करती थी। रक्कू के लिए वह जी रही थी। नियति ने रक्कू के प्राण छीनकर उससे अकेला बना दिया। वास्तव में यह नियति नहीं, प्राइवट बसों की प्रतियोगिता ने बसों के मालिक और बस चलाकों ने रक्कू का प्राणांत किया। हमें देखना चाहिए कि उन ताकतवार हत्यारों के विरुद्ध निर्बल स्त्री जो केवल डरी हुई चिडिया है। कहानी में माया डरी हुई चिडिया है। इसलिए माया प्रतिरोध नहीं करती है। उनके सामने तिरोहित हो जाने के सिवा कुछ भी करने की शक्ति नहीं है। इस प्रकार नियति की क्रूर विधि

---

1. संग्रथन 2010 - पृ. 10

झेलनेवाली अनेक 'माया' जैसी माँ सब कहीं घूम रही हैं। उनको प्रकाश में लाना उदय का लक्ष्य है। क्योंकि वे समय एवं समाज से जुडनेवाले लेखक हैं।

कुलमिलाकर कहा जाये तो उदय जी स्त्रियों के विभिन्न रूपों में शब्द कोशों के समूचे वाक्य से परे 'माँ' के अधिक पसंद करते हैं। वह घर को घर बनाती है। उनकी रचनाओं में अंधकारों में दीप होनेवाली माँ, अपने को इस पृथ्वी की गोद में देनेवाली माँ, बहु से झगडने वाली सासू माँ के रूप में, अपने बेटों से तिरस्कृत होने वाली मौसाजी जैसी माँ, एवं सिर्फ बच्चे के लिए जीनेवाली माया जैसी माँ हम देख सकते हैं। माँ के विभिन्न रूपों को उन्होंने सशक्त भाषा के ज़रिए इसलिए उतारा है कि Mother is the image of earth याने प्रकृति से जिस प्रकार की ऊष्मलता एवं तनाव मिलती है उसी प्रकार की ऊष्मलता माँ से मिलती है।

3.1.1.2 बहन

समय के साथ आज संबन्ध भी टूट गया है। गाँव से शहर की ओर आकर दिल्ली के कहानीकार उदय प्रकाश ने संबन्धों की शिथिलता को पाठकों तक पहुँचाने का सफल प्रयत्न किया है। पहले परिवार में बहन, भाई, माता, पिता, बुआ सब मिलकर रहते थे। आज अणु परिवार में संबन्धों का कोई महत्व ही नहीं है। भाई-बहन का रिश्ता एकदम मज़बूत था। वे दोनों एक साथ बैठकर खाते थे, खेलते थे और सहायक भी बनते थे। इस अवसर पर कार्बे के विचार समीचीन होगा - "A joint family in a group of people who generally live under one roof, who eat food coocked at one hearth, who hold properly in common

and who participate in common family worship and related to each other as some particular type of kindred"[1] अर्थात संयुक्त परिवार में परिवार संस्था अत्यन्त श्रेष्ठ हो जाती है। वहाँ जीनेवाले हर एक व्यक्ति में स्नेह, दया, आदान-प्रदान याने sharing mentality सब विद्यमान है।

उदय प्रकाश अपनी चर्चित एवं प्रसिद्ध कविता 'नींव की ईंट हो तुम 'दीदी' में दैनिक जीवन में अनेक मामुली वस्तुओं, छोटी छोटी झगडों और अन्य क्रिया व्यापारों से जुडी अपनी दीदी की याद है। कुछ साल बाद वे ससुराल चली गयी थी। बहन के गुण गान उदय जी यों करते हैं-

"ढिबरी थी दीदी तुम
हमारे बचपन की
अचार का तलछट तेल
अपनी कपास की बात में सोखकर
जलती रही
हमने सीखे थे पहले पहल अक्षर
और अनुभवों से भरे किस्से
तुम्हारी उजली साँस के स्पर्शों में
जलती रही तुम
तुम्हारे धूधा खोखती रही
घर की गूँगी दीवारें

1. Aileen D Ross - The Hindu Family in its Urban Settings - P. 9

छप्पर के तिनके-तिनके
धूधले होते गये
और तुम्हारी
थोडी सी कठिन रोश्नी में
हम बड़े होते रहे।"[1]

कवि के बचपन में दीदी थी। दीदी पीपल की छाया जैसी शीतल एवं सुखदायक थी। अध्यापिका का रोल आदाकर पहले पहल उसने अक्षर की दुनिया खोल दी। वह अनुभवों से भरी हुई कहानियाँ सुनाती थी और अपने घर के काम को अच्छी तरह से निभाती थी। अपनी बहन के बारे में उदय जी यों बताते हैं - "....पिता के न रहन जाने पर... हम दो लोग अकेले और अनाथ थे। मैं और मेरी छोटी बहन। अपनी छोटी बहन को अकेला न होने देने के लिए जीवित रहा।"[2]

3.1.1.3 स्त्री भ्रूण-हत्या

आज के वैज्ञानिक युग में स्त्री भ्रूणहत्या बडे पैमाने पर होने लगी। इसलिए स्त्री की संख्या आज कम हो रही है। यह एक दम खतरनाक स्थिति है। इस स्थिति पर उदय जी का विचार एक दम सही है - ध्वनि या चुंबकीय तरंगों के द्वारा मनुष्य के शरीर के भीतर के अंगों के चित्र उतारना जब संभव हुआ, तो बडी उम्मीदें बाँधी गई अंब के गर्भ में स्थित शिशु के स्वास्थ्य की पूरी देखभाल संभव होगी। तब किसे

---

1. उदय प्रकाश - अबूतर-कबूतर - नींव की ईट हो तुम दीदी - पृ. 13-14
2. उदय प्रकाश - ईश्वर की आँख - पृ. 16

पता था कि इसका इस्तेमाल हमारे लडकियों को भ्रूण में ही मार डालते के निमित्त किया जाएगा।"[1]

"हजारों-लाखों छुपती है गर्भ के अंधेरे में
इस दुनिया में जन्म लेने से इंकार करती हुई
वहाँ भी खोज लेती है उन्हें भेदिया ध्वनि तरंगे
वहाँ भी भ्रूण में उतरती है, हत्यारी कटार।"[2]

उदय जी यहाँ यांत्रिकी का मानवीय जीवन में हो रहे हस्ताक्षेप का प्रखर प्रतिरोध करते हैं। चिकित्सा शास्त्र में यांत्रिकी के हस्ताक्षेप से प्रकृति में स्त्री-पुरुष की संख्या का संतुलन बिगड रहा है। इसलिए स्त्री पर होनेवाला अतिक्रमण चौगुना बढ जायेगा।

3.1.1.4 पत्नी

पत्नी पूरे परिवार को एक सूत्र में बाँधती है। पुरुष ने ही इस पारिवारिक - संरचना को तैयार किया है। सचमुच नारी ही परिवार की प्रमुख सदस्या बनती है। लेकिन पुरुष वर्चस्ववादी समाज पत्नी को पति के प्रति निष्ठावान रहना पहला धर्म मानता है। पति की क्रूरता एवं आक्रोश आदि के बावजूद वह समर्पण शील बन गयी है। उदय प्रकाश की रचनाओं में चित्रित पत्नी उपेक्षिता एवं उत्पीडित होने पर भी कर्तव्यपरायणता को आगे बढाती है। वह बक्स, अलमारी और अन्य चीज़ों को

---

1. उदय प्रकाश - नयी सदी का पंचतंत्र - भय और कौतूहल - पृ. 207
2. उदय प्रकाश - रात में हार्मोनियम - औरत - पृ. 33

संभालकर रखने से आँखें झुकाये हैं, सूक्ष्मता के साथ फटे पुराने कपडे सिलाती है साथ ही साथ घर के इज्जत एवं मर्यादा को भी बनाये रखती है। याने कि कोई शून्य वेला उनको नहीं। वह तनख्वाह के बिना काम करती ही रहती है। जन्म से ही वह घर को प्रकाशमय बनाती है। इस अवसर पर लैवी सत्र का कथन समीचीन होगा - "हर समाज में ऐसा हुआ कि स्त्री को घरेलू जीवन बच्चों के पालन-पोषण, रसोई घर, समूचे परिवार की व्यवस्था, देख-रेख, मातृत्व के लिए दायित्व दिये गये, जबकि पुरुष का संबन्ध बाह्य जगत, सार्वजनिक क्षेत्रों, राजनीति, धर्म, दर्शन, ज्ञान-विज्ञान, उत्पादन के साधनों, बौद्धिक रचनात्मक कार्यों से हो गया।"[1] अर्थात पुरुष ने ही अपने संसार एवं स्त्रियों के संसार का अंतर किया है। पुरुष-व्यवस्था पत्नी के न्याय, साधना एवं तपस्या को पहचानते ही नहीं। वह अंदर ही रोकर जीवन बिताती है। उदय जी उनकी दर्द को यों उभारते हैं-

"बक्से, अलमारी, अरगनी
और घर के तमाम दरारें
कोने से
निकलते चले आ रहे हैं
कपडे, लत्ते, गूदड
निकलते आ रहे हैं
और वह सिलती जा रही है
सिलती चली जा रही है
उसी तरह तल्लीनता से आँखें गडाए

---

1. राजकिशोर - नारी विमर्श - पृ. 101

झुकी हुई
जैसे तपस्या कर रही हो
कपडे है कि फटते जा रहे हैं
पहुँचते जा रहे हैं उसके पास
तारीखे - महीने - घंटों के हिसाब से
गठन के गठन
x x x
वह सिल रही है
और आ रही है
और रो रही है
और धरती भी जाती है।"[1]

उदय जी कविता में बार-बार कहते हैं कि फटे कपडे सिलती जा रही है। इसका मतलब यह है कि कपडे के माध्यम से पूरे परिवार को सुरक्षित करना उनका लक्ष्य है। यहाँ कपडा सुरक्षा का प्रतीक है। पत्नी घर के किवाड, छप्पर, खपरैल, मुडेर से लेकर मयार बडेरी, दीवार, बच्चों की बीमारी, पति की टूटती नौकरी घाव सभी पर ध्यान देती है। फिर भी वह बाहरी तौर पर खुश है। फिर भी वह तर्कियों पर 'स्वागतम' और 'गुडनाइट' के बैगनी-पील-हरे बेलबूटे कात कर हमें मीठी नींद देती है। लगातार काम करके करके उम्र भी बढ गई। बाल सफेद हो रहे हैं। लेकिन आँखों की चमक में आज भी निर्ममता है। इस स्निग्धता के बावजूद स्त्री अपनी कर्तव्यपरायणता को प्रथम स्थान देती है।

---

1. उदय प्रकाश - रात में हार्मोनियम - तपस्या - पृ. 42-43

"ठीक जगह पर
बिठा रही है मयार, बडेरी
पैबंद लगा रही है
चिराते दीवालों पर
रफू कर रही है
बच्चे की बीमारी
जोड रही है
पति की छूटती-टूटती नौकरी
थेगली लगा रही है
पति के अपमान और
अपनी पीठ के
धावों पर
अनन कानन
सब सिले जा रही है
गिरस्थी की दरारों पर गिलाफ चढा कर
करीदे काठ रही है
सूद और किराये की
आच में जलते
ताकियों पर लिख रही है
'स्वागतम'
गुडनाइट
और बैगनी-पीले-हरे
बेल-बूढे-काढ रही है।"[1]

---

1. उदय प्रकाश - रान में हार्मोनियम - तपस्या - पृ. 44

ध्यान देने की बात तो यह है कि उसकी गृहस्थी में जबर्दस्त दरारें हैं इसलिए वह संबन्धहीनता को सहती है। लेकिन दरारों पर गिलाफ चढाना और सजाना, गुडनाईट और स्वागतम आदि लिखना भी उसके अंतर्विरोधों को सूचित करता है।

उदय प्रकाश की कविताओं में दमन की प्रस्तुति नहीं बल्कि पितृसत्तात्मक वर्चस्व की भयावहता में भी विभिन्न प्रकार की काम करनेवाली स्त्रियों को उतारा गया है। देखिए-

"एक पोंचा लगा रही है
एक बर्तन मांज रही है
एक कपडे पछीट रही है
एक बच्चे को बोरे पर सुलाकर सडक पर रोडे बिछा रही है
एक पठ रही है न्यूज कि संसद में बढायी जाएगी उनकी तादा"[1]

जाहिर है कि समाज में स्त्री का पोंचा लगाना, कपडे पछीटना, बर्तन माँजना सडकों पर रोडे बिछाना, फैशन परेड देखना आदि पुरुषों के आदेशों की परिणित है। स्त्री के ऊपर व्यवस्था ने जो सौंप दिया उसे वे पहचानती नहीं। वह ये सब अपना दायित्व ही समझती है।

उदय प्रकाश की चर्चित कहानी 'अरेबा-परेबा' में बच्चों को जबरदस्ती से सुलाकर पति के लिए भोजन बनानेवाली पत्नी, 'दिल्ली की दीवार' में पति के

---

1. उदय प्रकाश - रात में हारमोनियम - औरतें - पृ. 33

अन्य संबन्ध की जानकारी होने पर भी डाँट न करनेवाली बबिया जैसी पत्नी का ज़िक्र है। इस तरह की नारियों की जिंदगी प्रस्तुत करने का साहस उदय जी ने प्रस्तुत किया।

उदय प्रकाश अपनी कविता के द्वारा पत्नी के रूप में शोषण की शिकार बननेवाली स्त्री का चित्र पेश करते हैं-

> "वे पिता द्वारा वहाँ गमले में रोप दी गई तुलसी का पौधा थी
> वे किसी जर्जर नाव की सडी गली कमजोर पतवारे थी
> जिन्हें कोई स्वार्थी और क्रूर मल्लाह
> समुद्र में पीटता था।"[1]

स्त्री पहले अपने बाप द्वारा रोपी गयी पौधा थी। लेकिन विवाह के बाद जर्जरित नाव की कमज़ोर पतवारे के समान बन गयी। जिन्हें पति रूपी मल्लाह समुद्र (ज़िन्दगी) में निर्दयता से पीटता है।

उदय प्रकाश ने अलग-अलग परिप्रेक्ष्य में स्त्री को विशेषकर पत्नी के व्यक्तित्व को उभारा है। भारतीय समाज नारी के लिए पति एवं पुत्र में किसी एक व्यक्ति की आवश्यकता पर ज़ोर देता है। इसलिए पति या बेटे के द्वारा उनपर किए जानेवाले अन्यायों को चुपचाप सहती आ रही है। उदय जी अपनी कविताओं में उत्पीडनकारी सत्ता, कानून एवं न्याय व्यवस्थाओं पर प्रहार करते हैं। क्योंकि हमारी कानूनी व्यवस्था स्त्री के खिलाफ है। 'कवि की पीडित खुफिया आँख' इसे जाहिर करती है-

---

1. उदय प्रकाश - रात में हारमोनियम - पंचनामे में जो दर्ज़ नहीं है - पृ. 48

"हत्यारों ने उस औरत को मारने में दो मिनिट लगाये
उस पर दो शताब्दियों तक चलता रहा मुकदमा
जिसने सार्वजनिक कोष से साफ साफ उडा लिए करोडों रुपए
उसकी सत्तर साल तक जाँच करता है जाँच आयोग।"[1]

अपराधीकरण की प्रक्रिया तेजी से बढ रही है। अपराधियों का मनोबल एवं साहस बढा रहा है। कहना न होगा कि हमारे कानून, न्यायाधीश, जाँच आयोग की समितियाँ आदि अपराधीकरण की प्रक्रिया को तीव्रता प्रदान कर रही है। न्याय-व्यवस्था के चारों ओर से चोरों, माफियों और बलात्कारियों को पुलीस विभाग से लेकर कानून तक पर्याप्त सुरक्षा दे रहे हैं।

उदय प्रकाश की कविताओं में अपराधी संस्कृति एवं उसकी सहयोगी शक्तियों का नंगा यथार्थ उभर कर सामने आया है। उनकी कविताओं ने अपराधीकरण की प्रक्रिया और उसके हिंसक परिणामों को स्त्रीवादी मानवीय परिप्रेक्ष्य से उद्‌घाटित किया है।

"वर्षों तक, उन्हीं के खून और उन्हीं के रज से उनको नहालाते हुए
जब किसी एक दिन उन्हें मिट्‌टी के तेल या पेट्रोल में
भिगोया गया और एक तीली दिखाई गई
या जिस तकिए में उन्होंने 'गुडनाईट' या 'नमस्त' या फूल काढ रखे थे
वही तकिया
उनकी नाक में देर तक दबाया गया।"[2]

---

1. उदय प्रकाश - रात में हारमोनियम - कवि की पीडित खुफिया आखें - पृ. 49
2. उदय प्रकाश - रात में हारमोनियम - पंचनामे में जो दर्ज नहीं है - पृ. 46

3.1.1.5 बलात्कार की शिकार होनेवाली स्त्री

बलात्कार की समस्या आज बढ रही है। स्त्री आज केवल उपभोग की वस्तु मात्र माननेवाले नरपिशाचों के बीच जीवन बिता रही है। याने कि पुरुषों के सामने स्त्री केवल काम की पूर्ति की वस्तु मात्र बन गयी है। सुमन राजे का वक्तव्य इस अवसर पर समीचीन होगा - "स्त्री एक प्राकृतिक रचना है, इसका यह अर्थ भी नहीं कि वह सिर्फ शरीर के स्तर पर ही है। सच यह भी है कि उसका शोषण करनेवालों ने उसे शरीर ही समझा है।"[1] अर्थात नारी एक ऐसी रचना है जिसे स्वयं ईश्वर ही नमन करता है। इसका कारण यह है कि मानव जाति की गति और विकास स्त्री के बिना अधूरा है। स्त्री वरदान का स्वरूप है। इस स्त्री को आज शरीर या देह तक पुरुष सीमित करता है।

उदय प्रकाश की चर्चित कहानियाँ जैसे 'मैंगोसिल', 'हीरालाल का भूत', 'छतरियाँ' आदि बलात्कार की शिकार होनेवाली स्त्रियों को पेश करती हैं। नारी शोषण अनेक प्रकार के होते हैं। पति के द्वारा शोषित स्त्री, पति के साथियों से शोषित स्त्री, दफ्तरों में शोषित स्त्री, आदि। संक्षेप में कहे जाये तो स्त्री हर कहीं शोषण की शिकार बनती है। उदय प्रकाश ने 'मैंगोसिल' कहानी में पति के साथियों द्वारा शोषण की शिकार हुई शोभा की कथा बतायी है। प्रस्तुत कहानी के ज़रिए उदय की शोभा के विवाहोपरान्त संकीर्ण दायरे तथा उसकी विवशता को वाणी देते हैं। रमाकांत बेकार घूमता रहता है। सट्टा खेलने की लत लग गयी थी और पुलीस के लिए फर्जी गवाही करने का काम भी करने लगा था। उन्हीं दिनों पुलीस के एक

---

1. वागर्थ - अंक 158 - 2008 - पृ. 145

दरोगा की नज़र शोभा पर पड गई और वह हर रात वहीं से खाने पीने लगा। तीन महीने तक हर रात शोभा के जीवन में नरक से भी भयावह एवं यन्त्रणादायक थी। हमें पता है कि घरेलू स्त्रियाँ काम काजी नारियों की भाँति आत्मनिर्भर नहीं होती, क्योंकि वह कमाती नहीं, शोभा भी ऐसी गृहणी है।

नारी, ईश्वर की सर्वोत्तम कृति है। नारी कोमलता, सहनशीलता, दया, ममता पुरुष की शक्ति, ज्योति एवं दर्शन है। 'छतरियाँ' कहानी में लडका-लडकी दोनों जंगल में चार के पेड की चिरौजी खाने के लिए आये हैं। लेकिन आज जंगल में चार के पेड तो नहीं थे। दोनों जंगल की सुन्दरता एवं पेड-पौधों के बारे में बताते हैं। इसी बीच लडकी को प्यास लगी। जंगल में कहीं पानी नहीं था। पानी वहाँ न मिलने के कारण रेल की पटरियों के साथ जाने लगी। तभी रास्ते में उसे तीन मानवीय आकृति के राक्षस मिलते हैं जो उसे झाडियों के एक गड्डे में ले जाकर बलात्कार करते हैं। उदय जी इसका खुलासा यों करते हैं - "वे तीन लोग... पानी देने के लिए यहाँ झाड़ियों तक ले आए... लड़की कांपती हुई बोल रही थी। वह आवाज़ एक बहुत ठंडे, निर्मम और क्रूर यातनाघर से आ रही थी।"[1] उदय जी यह दिखाना चाहते हैं कि स्त्री पुरुषों की क्रूरता के सामने कमज़ोर हो जाती है। लेकिन प्रतिरोध की आवाज़ उससे उठनी चाहिए।

प्रस्तुत कहानी में लडकी प्रकृति का प्रतीक है। कहानी में लडकी द्वारा झेली जाने वाली सारी यातनाएँ, आज प्रकृति भी सहती है। स्त्री और प्रकृति की समाजधर्मिता और समान रूप से शोषण का शिकार बनना इकोफेमिनिसम की

---

1. उदय प्रकाश - पॉल गोमरा का स्कूटर - छतरियाँ - पृ. 30

परिभाषा के अंतर्गत आता है। इतने होने के बावजूद पति भी इसकी अस्तित्व को नकारता है। इसको विस्तार देनेवाली कहानी है 'मैंगोसिल'। बलात्कार की क्रूर मानसिकता का चित्रण यों दर्ज है - "बिल्डर और दरोगा ने शोभा के साथ अप्राकृतिक काम किया और बिल्डर ने उसके रेक्टम में बियर की बोतल घुसेड दी। दरोगा ने हंसते हुए पूछा - ये क्या कर रहे हो? तो बिल्डर ने कहा था अरे यार पछे ड्रिल करके जरा बोर बडा कर लेने दे, तभी तो नीचे मोटर फिट होगा। साला मेरा बीस हार्सपविर का जेनुइन क्रापटन का मोटर है। और ठहोक मार कर हसने लगा था। असहनीय दर्द के बीच, बेहोशी टूटने पर शोभा ने जब अपने कपडे पहनने और अपनी देह में लिपटा खून और वीर्य धोने के लिए उठाना चाहा, तो उसने पाया कि रमाकान्त उसके ऊपर चढा हुआ है।"[1] पति रमाकांत ने भी उसे बचाया नहीं, वह भी उसपर अपना पुरुषत्व दिखाता है। यह तो एक दयनीय स्थिति है। घर में भी वह सुरक्षित नहीं, केवल भोग की वस्तु मात्र थी। इसकी प्रतिक्रिया वह चंद्रकांत के साथ भागकर जताती है। वह मरना नहीं चाहती, जिन्दा रहना चाहती है। यह है आधुनिक नारी की ताकत। उदय जी अपनी कविता के ज़रिए इस प्रकार की हिंसा को झेलनेवाली स्त्रियों पर यों प्रकाश डालते हैं-

"आस्पताल में हज़ार प्रतिशत जाली हुई औरत का कोयला दर्ज
करता है
अपना मृत्यु पूर्व व्यान कि उसे नहीं जलाया किसी ने

---

1. उदय प्रकाश - मैंगोसिल - पृ. 92

उसके अलावा बाकि हर कोई निर्दोष
गली से उसके ही हाथ फुट गई किस्मत और फट गया स्टोव।"[1]

औरत के जले हुए शरीर का कोयला यह दिखाता है कि वह ही दोषी है। इसलिए पितृसत्तात्मक संस्कृति का साहस भी बढ गया। दूसरे शब्दों में कहा जाये तो उत्पीडित ही उत्पीडक को बचाने का रास्ता दिखाता है। इसलिए अपराधीकरण बढ गया। हमारी न्याय व्यवस्था पुरुषसत्ता के साथ है। न्याय व्यवस्था की कमज़ोरियों पर वे प्रकाश डालते हैं-

"हत्यारे ने उस औरत को मारने में दो मिनिट लगाये
उस पर दो शताब्दियों तह चलता रहा मुकदमा"
जिसने सार्वजनिक कोष से साफ साफ उडा लिए करोडो रुपये
उसकी सत्तर साल तक जाँच करता है जाँच आयोग।"[2]

अर्थात हमारी न्याय व्यवस्था स्त्री विरोधी है। कहना न होगा कि हमारी व्यवस्था, जाँच आयोग समितियों और कानून वर्षों तक मुकदमा चलाता है। लेकिन अंत में कोई भी न्याय शिकार को तो नहीं मिलता है। अपनी रचनाओं के माध्यम से उदय प्रकाश जी यह बताना चाहते हैं कि स्त्री चिंतन के सैद्धान्तिक स्तर से ऊपर की ओर जाये तो वहाँ समस्याओं से जूझनेवाली साधारण स्त्री का ज़िक्र न करे तो स्त्री चिंतन बेकार है। इसलिए उदय प्रकाश जी स्त्रीवादियों से अनुरोध करते हैं-

---

1. उदय प्रकाश - रात में हार्मोनियम - पृ. 32
2. उदय प्रकाश - औरत - पृ. 56

परदे के दुःख से मत जुडा
इसकी कॉपती-कौंधती रोशनी को
मत छूने दो अपना हृदय
फिजूल है परदे पर रोती एक
लाचार स्त्री के आँसू पोंछना
रोती रहेगी स्त्री परदे के भीतर
और परदे के बाहर इसी तरह शताब्दियों तक
जब तक उसे निर्देश होगा
जब तक मिलती अनुमति"[1]

उदय प्रकाश अपनी रचनाओं में स्त्री के विभिन्न रूप हम देख सकते हैं। माँ, पत्नी, बहन, भ्रूणहत्या करनेवाली स्त्री आदि अनेक स्त्री छवियों से हम परिचित हुए। उनकी रचनाओं का क्षेत्र घर की चार दीवारी में सीमित तो नहीं उससे काफी विस्तृत भी है। उनकी रचनाएँ बदलाव को व्यक्त करने में बहुत आगे हैं।

3.2 दलित

दलित शब्द का अर्थ है टूटा-हुआ, पिसा हुआ एवं कटा हुआ। अंग्रेजी में इसका अर्थ है डिप्रेस्ड। आधुनिक हिन्दी साहित्य में दलित संघर्ष की शुरुआत बीसवीं सदी के दूसरे दशक से होती है जब सन् 1914ई में महावीर प्रसाद द्विवेदी ने अपनी पत्रिका 'सरस्वती' के सितंबर माह में आधुनिक हिन्दी साहित्य के पहले दलित कवि हीना डों की कविता 'अछूत की शिकायत' छापी।"[2] वास्तव में यह

---

1. उदय प्रकाश - रात में हारमोनियम - परदा - पृ. 96
2. डॉ. नीरज शर्मा - अंतिम दशक की कहानियाँ, संवेदना एवं शिल्प - पृ. 84

कविता भोजपुरी में थी। दलित शब्द समाज के निम्न लोगों की ओर इशारा करता है। हिन्दु धर्म व्यवस्था में दलितों को कोई स्थान नहीं दिया गया। चातुर्वर्ण में दलित सबसे नीचे है वे अछूत हैं, अस्पृश्य है, चंडाल भी हैं। लेकिन आज संविधान ने उसे अनुसूचित जाति मानकर आरक्षण का प्रावधान किया। आरक्षण से समाधान नहीं होगा। दरअसल हमारी अर्थनीति में उदारीकरण, जिसे हम आर्थिक सुधार कहते हैं, मंडल कमीशन की सिफारिशों से लागू होनेवाले फायदे को निरस्त करने के लिए किया गया है। इसलिए जब बहुराष्ट्रीय कंपनियों और विदेशी संस्थाओं के साथ भारतीय सरकार ने समझौता किया। उसमें सेवा और श्रम की शर्तों का कोई प्रावधान नहीं रखा गया, उसमें कोई आरक्षण नहीं है। बडे-बडे कॉल सेंटर और तमाम विदेशी कंपनियों में काम करनेवाले युवाओं के पास आज कोई अपना अधिकार नहीं। सोलह से ज्यादा घंटों तक उनसे काम लिया जाता है। "सार्वजनिक क्षेत्र में दलितों और अल्पसंख्यकों के लिए जो आरक्षण रखे गए थे उनका प्रावधान भारत सरकार ने इन कंपनियों के साथ नहीं रखा। यह एक सोची-समझी राजनीति का हिस्सा था। जिसे 1990 के मंडल कमीशन के बाद देशी नौकरियों में जिन सामाजिक वर्गों को लाभ मिल सकता था, उनसे उन्हें वंचित किया गया। सार्वजनिक उपक्रमों को निजी क्षेत्र में सौंपने और पूँजी के विनिवेशीकरण के पीछे भी सवर्णवादी राजनीति की गहरी चाल है।"[1] अर्थात दलित सभी क्षेत्रों में हाशिए पर है। दलितों के राजनीतिक अधिकारों की माँग अंबेदकर ने शुरू की थी। अंबेदकर ने साफ साफ कहा था कि दलितों के दो दुश्मन प्रमुख हैं वे ही उनका सभी प्रकार

---

1. उदय प्रकाश - अपनी उनकी बात - पृ. 140

का शोषण कर रहे हैं - "मेरे विचार से देश के दो दुश्मनों से कामगारों को निपटना होगा। ये दो दुश्मन हैं ब्राह्मणवाद और पूँजीवाद।"[1] उदय जी के विचारक को भी इसके साथ जोडा जाता है - "...ब्राह्मण ग्रंथों और स्मृतियों में ब्राह्मणों ने विधिनांग संहिता बनाए, जहाँ एक ही अपराधी के लिए ब्राह्मण को पुरस्कार, क्षत्रियों को श्रम वैश्य को जुर्माना और शूद्र को फाँसी दी जाती थी।"[2] अर्थात् आज हमारे संविधान का व्यावहारिक और प्रभावी रूप भी जाति, सामाजिक हैसियत आदि को देखकर ही सजा देता है। यह इंग्लैंड या अमेरिका का पूँजीवादी लोकतांत्रिक संविधान नहीं है, जहाँ अपराध होने पर मंत्री, सीनेट मेंबर और राष्ट्रपति तक दंड मिल सकता है। सच्चाई यह है कि जातिवाद की बैशाखी पर ही हमारी राजनीति टिकी हुई है। लेकिन ध्यान देने की बात तो यह है कि समकालीन साहित्य दलितों की आत्मपहचान एवं विद्रोह का साहित्य है।

दलित साहित्य से संबन्धित दो ही विचार धारा प्रचार में है एक तो दलित साहित्यकार द्वारा लिखा गया साहित्य और दूसरा गैर दलितों द्वारा लिखा गया साहित्य। दलित चिन्तक कंवल भारती ने दलित साहित्य की चर्चा में उठे विवादों पर गहराई से विचार किया है। उन्होंने कहा है - "दलित साहित्य उनकी उसी अभिव्यक्ति का साहित्य है। यह कला के लिए नहीं बल्कि जीवन और जीवन की जीजीविषा का साहित्य है। इसलिए कहना न होगा कि वास्तव में दलितों द्वारा लिखा गया साहित्य ही दलित साहित्य की कोटी में आता है।"[2] अर्थात उनके

---

1. राजकिशोर - दलित राजनीति की समस्याएँ - पृ. 39
2. उदय प्रकाश - अपनी उनकी बात - पृ. 139
3. ओम प्रकाश वात्मीकी - दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र - पृ. 14

अनुसार दलितों द्वारा लिका गया साहित्य ही दलित साहित्य है। लेकिन बाबुराव बागुल ने दलित साहित्य की चर्चा में अपने मत को दूसरे ढंग से प्रस्तुत किया - "मनुष्य की मुक्ति को स्वीकार करनेवाला, मनुष्य को महामाननेवाला वंश, वर्ण और जाति का प्रबल विरोध करनेवाला साहित्य ही दलित साहित्य है।"[1] लेकिन दलित साहित्य इस तरह कैसे विकसित हुआ? वास्तव में गैर दलित साहित्यकारों ने इस परंपरा का निर्माण किया। पंकज चौधरी से बात चीत करते हुए शरणकुमार लिंबाले कहते हैं - "प्रेमचन्द जैसे अनेक गैर दलित प्रगतिशील विचारों के लेखकों ने दलितों के संदर्भ में जो लेखन किया है उसका महत्व कम करके नहीं आँकना चाहिए। ....प्रगतिशील गैर दलित लेखकों ने साहित्य की एक पृष्ठभूमि तैयार की है और उसी पृष्ट भूमि पर आज का दलित साहित्य रचा जा रहा है। अगर यह पृष्ठभूमि नहीं होती तो दलित साहित्य को सवर्ण जाति के पाठक नहीं मिलते। इसी तरह दलित साहित्य का स्वागत नहीं होता।"[2] जो भी हो दलित विमर्श में बहिष्कृत जातियों के लोगों की वेदना एवं उसे समाज की मुख्यधारा की ओर ले जाने का प्रयास ही है। अथवा दलित होने की स्थिति को खत्म करना समकालीन दलित साहित्यकार का लक्ष्य है।

उदय प्रकाश गैर दलित रचनाकार हैं। लेकिन उनकी रचनाएँ दलित वेदना को उकेरती हैं। दलितों के संबन्ध में उनका विचार है - "दलित अपना एक अलग चुनाव क्षेत्र तैयार कर रहे हैं, तो इसका स्वागत होना चाहिए।"[3] अर्थात उनकी

---

1. ओम प्रकाश वात्मीकी - दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र - पृ. 16
2. राष्ट्रीय सहारा - हिन्दी दैनिक - नवंबर 12, 2006 - पृ. 19
3. उदय प्रकाश - अपनी उनकी बात - पृ. 139

अस्मिता की रक्षा के लिए वे लड रहे हैं। समाज को उनकी लडाई में भाग लेना चाहिए। दलितों की समस्याओं को उदय जी ने जो पेश किया है उस पर विचार किया जाएगा।

3.2.1 दलित स्त्री : बलात्कार की शिकार

स्त्री चोह दलित हो या अन्य जाति की हो दोनों आज कहीं भी सुरक्षित नहीं है। बलात्कार की समस्या दिन-ब-दिन बढ रही है। बलात्कार की परम्परा तभी से चल रही है जबसे पुरुष-प्रधान समाज शक्तिशाली बना-यानी पितृसत्तात्मक सत्ता चलने में आई। 'बलात्कार' में सहमति एवं सहभागिता तो नहीं। इस अवसर पर रमणिका गुप्ता की विचार समीचीन होगा - "बलात्कार में सहमति और सहभागिता की शर्त का उल्लंघन होता है। ....बल प्रयोग से भी अधिक औरत की शुचिता, पवित्रता, सतीत्व, पातिव्रत्य या कौमार्य का भंग होना होता है।"[1]

'हीरालाल का भूत' में पीडित एवं बलात्कार की शिकार होनेवाली फुलिया की कहानी है। बलात्कार का सामन्ती पूँजीवादी वर्गवादी, और वर्णवादी सामाजिक व्यवस्था से भी बहुत गहरा रिश्ता है। फुलिया गरीब तो थी है, वह दलित भी थी। ठाकूर एवं पूँजीपतियों के घर में दलित स्त्री बलात्कार की शिकार किस प्रकार बनती है इसका खुलासा है। फुलिया का पति हीरालाल ठाकूर साहब का नौकर था। फुलिया भी बीच बीच में ठाकूर के घर में आती है। एक दिन हीरालाल शाम को ही ठाकूर साहब के घर का सौदा सामान लेने बाज़ार चला गया था। दोपहर बरतन जूठे पडे थे, इसलिए उन्हें माँजने और बाकी काम निपटाने के लिए फुलिया

---

1. रमणिका गुप्ता - स्त्री विमर्श : कलम और कुदाल के बहाने - पृ. 43

वहाँ आयी। सात बजे होंगे कि ठाकूर साहब ने फुलिया को आवाज़ देकर बुलाया। और उसे कागज़ देकर कहा कि इसे वह पटवारी को दे आये। लेकिन ठाकूर एवं पटवारी के बीच पहले ही बातचीत हो चुकी थी। फुलिया पटवारी में पहूँची। तो वहाँ का भयानक चित्रण उदय प्रकाश हमारे सामने यों प्रस्तुत करते हैं - "....उसने उसे पकड़ लिया साकला भीतर से चढा ली, रेडियो की आवाज़ खूब ऊंची कर दी और इस तरह हीरालाल की संपत्ति का आखिरी कोना, उसकी औरत की आबरू भी जाती रही। आधे घंटे के बाद ठाकूर हरपाल सिंह भी उस कमरे में आ गये और फुलिया पटवारी के पलंग पर सिसकती रही।"[1] दोनों ने उस गरीब दलित स्त्री पर अपना पुरुषत्व दिखाये। पैसे का बल दिखाने के लिए फुलिया को दोनों ने पाँच-पाँच रुपये दिये। उदय जी दलितों के प्रति हमदर्दी जताते हुए कहते हैं - "...जमीन, जायदाद, ज़िंदगी, पसीने से लेकर औरत की इज्जत तक.....।"[2] कहानी के ज़रिए उस दलित स्त्री की शोचनीय दशा को व्यक्त होती है। प्रतिक्रिया करने में वह असफल है। इसका कारण वह कहती है - "...अत्याचार किये, लेकिन वह सहती रही। उसे कभी... शिकायत नहीं की, क्योंकि उसे निरक्षरता और सामाजिक पूर्वग्रह की चुनौतियों का सामना करना पडता है। उसे मालूम था कि उनकी जाति में सामूहिक शक्ति का अभाव है। इसलिए उन्हें सबकुछ चुपचाप सहती।"[3] अर्थात सामूहिक शक्ति, एवं शिक्षा की ज़रूरत से ही हर एक समुदाय में प्रतिरोध करने की

---

1. उदय प्रकाश - हीरालाल का भूत - पृ. 141
2. वही - पृ. 142
3.

शक्ति मिलती है। प्रेमचन्द ने भी दलित उद्धान के लिए एक प्रस्ताव रखा था - "यदि हम अपने हरिजन भाइयों को उठाना चाहते हैं तो हमें ऐसे माध्यम अपनाने होंगे जो उनके उठन में मदद दें। उनके लिए छात्रवृत्तियाँ, शिक्षागृह होने चाहिए। नौकरियाँ देने में उनके साथ थोडी रियायत रखनी चाहिए।"[1]

उदय प्रकाश उपेक्षित एवं बलात्कार की शिकार होनेवाली फुलिया जैसे अनेक दलित स्त्रियों की जागृति के लिए आह्वान निम्नलिखित कविता में करते हैं-

"जाकर कहेंगे गाँव
शहर-शहर और छोर कि बैरागी आया इस बार
संदेश
कि सबसे सब तैयार हो जाये
कि बीत रहा है
कलियुग का एक ओर चरण
कि ढह रहा है
काल का एक और कठिन कगार
कि पछाडे मार रहा है
दबी हुई जाति का विराट सागर
...हजारों-लाखों सालों से चुप खडे
पहाडों के भीतर
उनके हृदय में

---

1. ईक्षा - अंक-13 2015 - पृ. 15

जा रही है वर्ग चेतना की
नयी ज्वालामुखी"[1]

अर्थात दबी हुई जाति से आज आवाज़ की जरूरत होती है। याने कि प्रतिरोध करने की आवश्यकता होती है।

उदय जी की रचनाओं में प्रतिरोधी दलित स्त्री का चित्रण भी हुआ है। 'हीरालाल के भूत में' फुलिया विद्रोही नहीं है तो 'मोहनदास' में कस्तूरी प्रतिरोध जाहिर करनेवाली है। एक दिन सुबह कस्तूरी गाँव की दो तीन औरतों के साथ दिशा-फरकत को गई थी। उसे झाडियों के पीछे कुछ हलचल का आभास हुआ। जैसा वहाँ कोई छिपा बैठा हो। कस्तूरी इन दिनों अपनी हिफाजत में कछनी हसिया खोंस कर रखती थी। क्योंकि उसे इस बात का अच्छी तरह अहसास था कि दो बच्चों की माँ बन जाने के बाद भी वह अभी तक गाँव में सबसे सुन्दर कदर-काठी, चेहरे-मोहर की औरत है। उससे गाँव के ठकुरान-बभनारोहयें की नज़रें गिद्ध की तरह उस पर पडी हुई हैं। कस्तूरी उठकर खडी हो गई। उसने कमर में खुसी हुई हसिया निकालकर हाथ में थाम लिया और सधे कदमों से झाडी की ओर बढी। उसके पीछे सोमाली, सितिला, चंदना और सावित्री थी। कस्तूरी चीखी बाकी औरतें ने भी झाडी का घेरा डालना शुरू किया। सब के हाथ में एक-एक टट्टी वाला लोटा था। झाडी से फचाक से निकल कर छत्रधारी का लडका विजय तिवारी भागा। बनियन और चड्डी में उसका चर्बी चढा थुल थुल शरीर भागता हुआ

---

1. उदय प्रकाश - वैरागी आया है गाँव - पृ. 113

गोलमटोल कलिदरा (तरबूजा) जैसे दिखाई दे रहा था। कस्तूरी कुछ दूर तक उसकी ओर दौडी। रमोली, सितिया और सावित्री ने गरियाते हुए टट्टी के लोटे खींच खींच कर मारे। दरोगा विजय तिवारी गिरना पडता बगटूट भाग रहा था। औरतें पीछे से चिल्ला रही थीं - "अरे टी.वी वालने का गोहरावा। सीन खीचै (अरे टी.वी वालों को बुलाओ। सीन खीचो।"[1] अर्था मीडिया बहुत ताकतवार होता है। दलित स्त्रियों में कस्तूरी के समान हिम्मत होनी चाहिए। उदय जी दलित स्त्री की प्रतिक्रिया एवं प्रतिरोध को और मजबूत करने के लिए कुछ टिप्पणियाँ कहानी के बीच-बीच में देते हैं - "....जब समूचे ऐशिया के राजनीतिक इतिहास में पहली बार एक भारतीय स्त्री कम्यूनिस्ट पार्टी पोलित ब्यूरो की सदस्या बनी थी, एक दूसरी स्त्री ने प्रधानमंत्री की कुरसी ढुकरा दीं....।"[2] अर्थात बीच बीच में इस प्रकार की टिप्पणी देना उनकी शैली है। इस टिप्पणी के माध्यम से आज की स्त्रियों की स्थिति में जो बदलाव आया उसकी सूचना दी जाती है। स्त्री चाहे दलित हो या अन्य जाति की हो उसमें ऊँची ओहदे निभाने की शक्ति है।

3.2.2 स्वत्व हनन

भूमंडलीय संस्कृति में दलितों एवं अन्य हाशिएकृतों का स्वत्व हनन हो रहा है। आज दलितों के अधिकार मात्र नहीं अस्तित्व भी छीन लिया जा रहा है। गंगा प्रसाद विमल ने कहा है - "भारतीय समाज की मुख्यधारा के अंदर और बाहर

---

1. उदय प्रकाश - मोहनदास - पृ. 71
2. वही - पृ. 77

हाशिए की ज़िंदगी व्यतीत कर रहे ये लोग भूख की समस्या और अस्तित्व रक्षा के संकट को जूझ रहे हैं।"[1]

'मोहनदास' कहानी में हाशिए के दलितों के स्वत्व हनन और उन स्वत्व भ्रष्ट होलों के अरक्षित जीवन की विडम्बनाओं की त्रासदी है। 'मोहनदास' ऐसे स्वत्वहारा वर्ग की प्रतिनिधि है, जिसने निम्न जाति के गरीब होते हुए भी उच्च शिक्षा उच्च श्रेणी में प्राप्त की। कठिन परिश्रम के बाद नौकरी तो मिली लेकिन नियुक्ति नहीं हुई। बाद में उसे पता मिला कि उसकी जगह उसके नाम, पते पर बिसनाथ जो पूंजीपति का बेटा है, काम कर रहा है। मोहनदास के प्रमाणपत्र सहित सर्वस्व छीनकर ऊँची जाति का बिसनाथ, मोहनदास बन जाता है। और वह उसके स्वत्व एवं नौकरी को हडप लेता है। मोहनदास अपने को असली सिद्ध करने का कठिन प्रयत्न करता रहा। बल्कि उसके खिलाफ नौकरशाही, राजनीति एवं गुंडागर्दी का संघबद्ध षड्यंत्र था। वह अपने को असली स्थापित नहीं कर सकता। पूँजीपतियों के आतंक के सामने मोहनदास आतंकित रह जाता है। आज सामाजिक जीवन के सभी क्षेत्रों में नकलियों ने जाल बिछाकर रखा है। सारी व्यवस्थाएँ उनके साथ हैं। इसलिए असली 'मोहनदास' पागल होकर घूम रहा है एवं नकली मोहनदास (बिसनाथ) ऊँचे आहदे में है। आज नौकरी प्राप्त करने के लिए शिक्षा एवं वांछित अर्हताओं की जरूरत तो नहीं बल्कि ऊँचे जाति, धर्म, एवं पैसा की ताकत के आधार पर है। मगर कहानी का मोहनदास मरता नहीं, निरंतर मरने के लिए जीवित

---

1. गंगा प्रसाद विमल - आधुनिक हिन्दी कहानी - पृ. 216

रहता है। अस्तित्व विहीन होकर मोहनदास कहता है - "....आखिर वह खुद कौन है? मोहनदास या बिसनाथ? क्या उसने एम.जी डिग्री कॉलज से बी.ए. की परीक्षा में जो डिग्री हासिल की थी, वह बिसनाथ के लिए ही थी? क्या सभी के साथ ऐसा ही होता है?"[1] क्या सभी के साथ ऐसा ही होता है इसका उत्तर उदय जी यों देते हैं - "जो दलित है, जो गरीब है और जिसके पास ताकत नहीं है उसकी इयत्ता को कुचला गया। क्योंकि मोहनदास के साथ यह सब कुछ उस समय हुआ, जब साढे तीन हज़ार बाँधों के लिए पाँच करोड से ज़्यादा आदिवासी और दलितों के घर खेत-बारी पानी में डूबा दिये गए थे... जब देश के 20 करोड लोगों के पास पीने का पानी तक नहीं था... और साठ करोड के पास हगने, नहाने और मूतने की जगह नहीं थी...।"[2] अर्थात मोहनदास जैसे अनेक दलित समस्याओं को झेल रहे हैं। हमें देखना चाहिए कि दलितों के उद्धार शिक्षा के द्वारा हो सकता है, इस नारे को मोहनदास जैसे पात्रों के द्वारा उदय जी हवा में फेंक देते हैं। क्योंकि शिक्षित होने पर भी मोहनदास से शिक्षा एवं अस्तित्व को पूँजीवादी समाज ने छीन लिया है।

3.2.3 प्रतिरोधी दलित युवापीढ़ी

'मोहनदास' कहानी में प्रतिरोध की कोई गुँजाईश नहीं है तो 'पुतला' कहानी एक अतिरंजित रूप में पाठक के सामने प्रतिरोध का रास्ता खोल देती है। यह पुरानी पीढ़ी एवं नई पीढ़ी की कहानी है। पुरानी पीढ़ी प्रतिक्रिया विहीन रही थी

---

1. उदय प्रकाश - मोहनदास - पृ. 53
2. वही - पृ. 61

तो दूसरी पीढी प्रतिक्रिया करने का साहस दिख रही हैं। कहानी में चौधरी भीखनदास का चरित्र अतिरंजनापूर्ण है। उनके गाँव में एक चौहद्धी है। उस चौहद्धी को भीखनदास अपना आबरु समझता है। चौहद्दी में मेला, हाट प्रदर्शनी सबकुछ लगता है। चौहद्दी की प्रतिष्ठा और ख्याति का कारण यह है कि यहाँ रामलीला होती है। कहानीकार स्पष्ट करते हैं कि रामलीला में राम, सीता और हनुमान के पात्र तो सवर्ण बच्चे अदा करते हैं। लेकिन रावण, और राक्षसों की भूमिका दलितों को आदा करनी पडती है। रामलीला में पुतला बनाने का काम दनू पासी का लडका खिश्नू करता है। किश्नू के पिता के रोल में चौधरी घर का नौकर था। वह दिन रात काम करता ही रहता था। उसने कुछ रुपये हरसू प्रसाद से खरीदा। सौ रुपये वापस देने के लिए कई साल उन्होंने काम किया। ड्योढे के हिसाब से सौ रुपये मूलधन बीस साल मे सोलह सौ रुपये हो जाते हैं। अशिक्षा एवं प्रतिरोध की हिम्मत न होने के कारण वह कमजोर हो गया। किश्नू पुतला बनाने समय अपने बाप की याद आयी - "सौ रुपये के पीछे वह बाईस वर्षों तक अपना हाड तोडता रहा, पसीना बहता रहा, दिन रात चौधरी के खेतों के साथ जूझता रहा, ईट थापता रहा। सुद तक आदा नहीं हुआ।"[1] अर्थात अमानवीय सामाजिक संरचना में एक वर्ग अपना हाड, पसीना और सबकुछ छोडकर भूखा मरने के लिए मजबूर होता है। किश्नू इन सबका प्रतिरोध अपनी कला के जरिए करता है। रामलीला का दिवस राम के राज्य तिलक से शुरू हुआ। राम ने धनुष ठकार की। दो बार छोडे हुए बाण बीच में ही हवा में बुझ गये। तीसरे बाण ने सीधा रावण की नाभि पर टकराया और बारुद की

---

1. उदय प्रकाश - दरियाई घोडा - पुतला - पृ. 78

बत्ती सूर्र से जल उठी। आग के प्रकाश में पुतले का चेहरा दिखाई देता है - "रावण के हाथ में अनार फिट था। अनार झरझराकर जलने लगा तो रोशनी हुई। रावण का चेहरा ऊपर की ओर तना हुआ था। पूरा चेहरा दिख गया। जनता में कानाफूसी शुरू हो गयी, अरे देखो, यह तो चौधरी भीखन दास का पुतला मालूम होता है। कमाल का बनाया है किशनू पासी ने। तभी कुंभकर्ण का चेहरा भी अतिशबाजी की चमकदार रोशनियों में झलका। समनू के गेंग ने अचानक जोरदार नारा लगाया, हरसू... देखो हरसू परसाद। बोलो हरसू परसाद की जाय....।"[1] तात्पर्य यह है कि रावण और कुम्भकर्ण की जगह पर चौधरी भीखमदास और हरसूपरसाद के पुतले बनाकर अपने प्रति किए अन्याय और अपनी जातियों से किए गए अन्याय के लिए प्रतिरोध कला के ज़रिए करता है। यह घटना से वह क्रान्तिकारी बनता है।

उदय जी की चर्चित कहानी 'पॉल गोमरा का स्कूटर' में एक प्रतिरोधी दलित कवि का चित्र है। आदि से पॉल गोमरा ने कुछ और नहीं सिर्फ कवि बनना चाहा था। एक बिलकुल निरापद, खाली, और निर्जन क्षेत्र स्कूली कॉपियों में कविताएँ लिखने पर उन्हें डॉट खानी पडती थी। नये नये शब्दों को दीवारों पर वे लिखते हैं और घूरते। वे तुलसी, कबीर, नेरुदा या मीर जैसा कवि बनना चाहता था। वैसे ही भाषा, उसी तरह के शब्द और हृदय के भीतर तक उतर जानेवाली वैसी ही कारुणा के कवि....। लेकिन इस नए यथार्थ ने उनसे वह स्वप्न भी छीन लिया था। वास्तव में वह कुछ नहीं रह गया था, न कवि, न नागरिक, न शायद

---

1. उदय प्रकाश - दरियाई घोडा - पुतला - पृ. 79

ठीक-ठीक ढंग से मनुष्य ही। हमें पता है व्यक्ति समाज का अंग है। समाज से स्थापित मान्यताओं के केन्द्र में व्यक्ति है। अपनी इच्छाओं और सुविधाओं के मूल्य पर भी वह समाज की मान्यताओं का अनुपालन करने की कोशिश करता है। लेकिन पॉल गोमरा इससे भी वंचित था।

पॉल गोमरा को एक आयोजन में शामिल होने का इन्विटेशन कार्ड मिला। किसी मंत्रालय के सचिव स्तर के एक प्रशासनिक अधिकारी को एक साथ पद्मश्री, साहित्य भूषण, वेदव्यास सम्मान तथा जापानी सहयोग से भारतीय कार बनानेवाली मौकाजी कंपनी की ओर से दस लाख रुपये का 'सृजन शिखर' पुरस्कार मिला था। लेकिन उस कार्यक्रम में जाना उनका मित्र रोकते हुए कहता है - "लिसँन पॉल ये प्रोग्राम तुम्हारे जाने का नहीं है। ....तुम्हारी दुनिया अलग है, उन लोगों का अलग है। दे आर पावर फुल मनीड पीपँल। यू आर पुअर, ...ठीक हिन्दी पोएट।"[1] मतलब यह है कि पॉल गोमरा दलित होने के कारण वहाँ अवहेलना ज़रूर होगी। उनके पास मनी (Money) और पवर (Power) नहीं। मित्रता एक पवित्र नाता होती है। मित्र के जीवन में आनेवाला हर संकट, दुःख मित्र को व्याकुल बना देता है। आज न ऐसा मित्र है, न ऐसी मित्रता। इसकी स्थापना भी उदय जी करते हैं। उस समारोह में जितने भी गणमान्य लोग सम्मिलित थे, किसी ने भी पॉल गोमरा का समर्थन या सहानुभूति में एक शब्द भी नहीं कहा था। समारोह में प्रधान वक्ता ने कहा - "ऐसे चिरकुट कवियों को तो ऐसे आयोजनों में बुलाना ही नहीं चाहिए।

---

1. उदय प्रकाश - अरेबा-परेबा - पॉल गोमरा का स्कूटर - पृ. 160

उसने तो ससुरी हिन्दी की नाक ही काट दी।"[1] इस प्रकार के अमानवीय भाषणों को सुनकर आज के दलित समाज को हसी नहीं आती, घृणा आती है। व्यवस्था के प्रति घृणा। इसकी प्रतिक्रिया पॉल गोमरा स्कूटर के पीछे बैठकर व्यवस्था से चिल्लाते हैं - "...ये हिन्दी तो मोचियों, जुलाहों, नाइयों, घोबियों, फ़कीरों और साधुओं की भाषा है....।"[2] अर्थात सभी मनुष्यों को अपनी माता, मातृभूमि तथा मातृभाषा से अत्यन्त लगाव होता है। यह लगाव भी दलितों से छीन लिया है।

दलित समाज को अपनी दलित होने की स्थिति को खत्म करने में आनंद मिलेगा। तब तो उसकी पहचान होगी। यहाँ पॉल गोमरा ने अभी तक नाम आदि परिवर्तित कर अपनी पहचान स्थापित करने की कोशिश की। लेकिन उसमें वह असफल हुआ। बुनियादी जो कारण है, उसमें परिवर्तन किए बिना दलितों का उद्धार संभव नहीं। वह बुनियादी कारण यहाँ की व्यवस्था है। पॉल गोमरा कहता है - "मैं हूँ दलित हिन्दी कवि रामगोपाल।"[3] किसी को अपनी पहचान प्राप्त होने का मतलब जीवन की मुक्ति है, दलित समाज में पले रामगोपाल अपनी पहचान के लिए लड रहा था। अंत में इस व्यवस्था से मिल न पाने के कारण उसको पागल बनना पडा। पागल होने पर भी वह व्यवस्था पर थूकते और गालियाँ देते हैं। इस प्रकार अन्याय का विरोध कहीं मुखर रूप में हुआ है तो कहीं भीतर ही भीतर दबे हुए व्यंग्यात्मक स्वर में। पॉल गोमरा खुलकर प्रतिरोध अपनी कविता के ज़रिए यों करते हैं-

---

1. उदय प्रकाश - अरेबा-परेबा - पॉल गोमरा का स्कूटर - पृ. 164
2. वही - पृ. 164
3. वही - पृ. 169

"जो प्रजातियाँ लुप्त हो रही हैं
यथार्थ मिटा रहा है जिनका अस्तित्व
हो सके तो हम उनकी हत्या में न हो
शामिल
और संभव हो तो संभालकर रख ले
उनके चित्र....
ये चित्र अतीत के स्मृति-चिह्न है...।"[1]

यहाँ की जो आदि जातियाँ एवं प्रजातियाँ विलुप्त होती जा रही हैं, चाहे मनुष्य हो, जानवर हो या पेड-पौधे हो। इस प्रकार की व्यंग्यात्मक कविताएँ आज की सच्चाई के दस्तावेज हैं।

3.2.4 विद्यालयों में शोषित दलित

'पीली छतरीवाली लडकी' कहानी दलित विषय की कहानियों की चर्चा में ज़्यादा आयी। कहानी का नायक राहुल दलित नहीं लेकिन वह दलितों के साथ खडा होता है। उदय जी इस पर अपना विचार यों प्रकट करते हैं - "...कथा में देखें तो उसके मुख्य पात्र राहुल की जातिगत अस्मिता का कोई संकेत कहीं नहीं है। वह दलितों के साथ है इसलिए है कि मौजूदा राजनीतिक और सांस्कृतिक व्यवस्था में वह भी उनकी तरह ही उत्पीडित है।"[2] राहुल आंध्रपोलजी को छोडकर हिन्दी साहित्य में एक विद्यार्थी के रूप में प्रवेश लेते हैं। राहुल, शैलेन्द्र एवं जार्ज के

---

1. उदय प्रकाश - अरेबा-परेबा, पॉल गोमरा का स्कूटर - पृ. 169
2. उदय प्रकाश - अपनी उनकी बात - पृ. 140

अलावा सभी लोग ब्राह्मण हैं। अन्य विद्यार्थि हमेशा इन तीनों को देखकर मज़ाक उठाते हैं। यह सुनकर राहुल को ऐसा लगा - "...ये आवाज़ें ठहाकों की नहीं जातीय घृणा की उस मध्यकालीन आग की थी जो ढूब की तरह उस पौराणिक भट्ठी से निकल कर बहती हुई उनके कानों में छुस रही थी।"[1] यह निंदा दलितों में भी आक्रोश उत्पन्न करती है, राहुल दलित नहीं है फिर भी वह आक्रोश के ज़रिए आवाज़ उठाता है - "वे क्रिटर्स थे। सबसे पहले उन्होंने पृथ्वी के इस हिस्से के सूरज को खाकर इतिहास में एक ऐसा अंधेरा पैदा कर डाला था, जिसके भीतर कोई उनके चलते हुए शाश्वत भूखे जबडों और चमकीले, धारादार, विषैल दांतों को न देख सके। उन्होंने बुद्ध को खा डाला था, जातक कथाओं, उपनिषदों और लोकगाथाओं को खा डाला था। उन्होंने ईसा, पीर-पैगबर, सूफी-संत सबको चट कर के उनकी हड्डियों की खाद बनाकर उसे अपने उन विषैले पेड-पौधों की जडों में डाल दिया था।"[2] अर्थात ब्राह्मणवाद ही दलितों का शत्रु है।

राहुल होस्टल के खर्च के लिए ट्यूशन चलाता है, लेकिन सवर्ण समाज उस पर आरोप लगाता है। इस तरह उनके तीन ट्यूशन बंद हो गये। विश्वविद्यालय के अध्यापक डॉ. डंगवाल और डॉ. लोकनाथ त्रिपाठी ने लडकियों को अलग बुलाकर राहुल से मित्रता जोडना रोक दिया। राहुल अपनी प्रतिक्रिया दूसरी तरफ से करता है। वह अंजली नामक ब्राह्मण युवती से प्रेम करता है। क्योंकि वह इस भ्रष्ट सरकार के एक ब्राह्मण मंत्री एल.के जोशी की बेटी है। राहुल के अनुसार

---

1. उदय प्रकाश - पीली छतरीवाली लडकी - पृ. 55
2. वही - पृ. 55

ब्राह्मणत्व शताब्दियों से इधर अन्याय एवं भ्रष्टाचार आदि चलाता आ रहा है। वे भोगवादी हैं। उनकी सत्ता भी अभिशाप बनकर आज हमारे ऊपर नाच रही है। राहुल इस अभिशाप के ऊपर प्रश्न चिह्न लगाकर यों कहता है - "...मैं राहुल नहीं हूँ। मैं एक तेंदुआ हूँ अ. पैंथर" तेन्दुए ने पूरे बनैलेपन के साथ अपने शिकार पर हमला कर दिया था।"[1] उदय जी राहुल के प्रतिरोध चेतना को इस तरह व्यक्त करते हैं - "...अब वह पूरी ताकत के साथ, दबी-कुचली जातियों की समूची प्रतिहिंसा के साथ, शताब्दियों से उनके प्रति हुए अन्याय का बदला ले रहा था, थप्.... थप्।"[2] यहाँ ध्यान देने की बात तो यह है कि राहुल सिर्फ अंजली से प्रतिरोध नहीं करता बल्कि समूचे ब्राह्मणवाद से प्रतिरोध करता है।

कुलमिलाकर कहा जाये तो उदय जी दलितों के पक्ष में खडे होनेवाले रचनाकार हैं। ब्राह्मणत्व एवं वर्णाश्रम धर्म की सडी गली व्यवस्था के कारण सदा से अधिकार से बंचित होकर अस्मिता विहीन जातियों को सक्रिय बनाकर उस दमननीति के खिलाफ प्रतिरोधी भाषा का प्रयोग करने को सक्षम बनानेवाले कई पात्र उदय प्रकाश की कहानियों में हैं।

3.3 आदिवासी

आदिवासी प्रकृति में जन्म लेता है। वह प्रकृति को नष्ट नहीं करता, उसको पालता और पोसता है। वह प्रकृति की आपदा को सहता है। आदिवासी

---

1. उदय प्रकाश - पीली छतरीवाली लडकी
2. वही - पृ.

संस्कृति एक अलग संस्कृति है। वह अपनी भाषा, त्योहार, रीति-रिवाज़ सबको समेटते हुए मुख्यधारा से दूर रहता है। रमणिका गुप्ता के अनुसार - "दरअसल आदिवासी अपने श्रम के बल पर सदैव आत्मनिर्भर और स्वावलंबी रहा है। अपने समूह और समाज से जुडकर प्रकृति का साथी बनकर जीना उसकी शैली और स्वभाव रहा है। वह प्रकृति से संवाद करता चलता है, उसका सहयात्री है, उसको गाय की तरह वह पोसता और दुहता है। उसे कब्जे में लाने का कभी भी उसका लक्ष्य नहीं रहा।"[1] आज़ादी के पहले आदिवासियों द्वारा ब्रिटीश लोगों के खिलाफ जल हमारा है, पेड हमारा है, पहाड हमारा है, धरती हमारा है जैसे नारे लगाए गए थे। लेकिन इतिहास में उनका नाम तो कम ही मिलता है। इसके अलावा आदिवासी लोग आज अनेक कारणों से विस्थापित होकर अपना घर-खेती-बाडी सबकुछ छोडकर चले जाते हैं। कुछ लोग शहर में आते हैं और कुछ जंगल के भीतरी भाग की ओर जाते हैं। आदिवासियों का शोषण से मतलब प्रकृति का शोषण ही है। विकास के नाम पर उनकी भूमि का लगातार अधिग्रहण हो रहा है। इस तरह वे हाशिए पर हैं। आदिवासियों पर सरकारी दमन अमानवीय है। आदिवासी समाज कई तरह के प्रताडनों का शिकार बनता आ रहा है। उसके साथ शासकों ने मनुष्य जैसा व्यवहार नहीं किया। यह बात नहीं है कि रहन-सहन के स्तर से लेकर भाषा, संस्कृति सहित अनेक स्तरों पर वे मुख्यधारा के समाज से काफी अलग दिखाये जाते हैं। लेकिन वे कोई दूसरे ग्रह के प्राणी नहीं हैं। वे अपनी सारी विषमताओं के बीच में भी अपनी संस्कृति को बचाने की कोशिश करते हैं, जो प्रकृति के बीच

---

1. रमणिका गुप्ता - आदिवासी स्वर और नयी शताब्दी - पृ. 8

विकसित हुई है। जिनके पर्व, त्योहार, देवताओं तक में प्रकृति शामिल है। समकालीन साहित्य में आदिवासी जीवन में होनेवाली समस्याओं को रचना के केन्द्र में लाया जा रहा है।

समकालीन रचनाकार उदय प्रकाश के जीवन का लंबा हिस्सा आदिवासी जीवन के बीच ही गुज़रा है और उनकी साहित्यिक ऊर्जा का उत्स भी वहीं पर है। अपने प्रारंभिक साहित्यिक परिवेश के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा - "मैं मध्यप्रदेश के शहडोल जिले के सीतापुर क्षेत्र का हूँ यह की 82 प्रतिशत आबादी गोंड कोल् और अन्य आदिवासियों की है। यह इलाका छोटानागपूर इलाके तक है। मेरी-पढाई-लिखाई उसी परिवेश में हुई थी। वही का जीवन मेरा परिवेश था।"[1] इसलिए वह आदिवासी एवं पिछडे वर्ग के प्रति हमदर्दी अपनी रचनाओं में जताता आ रहा है। आदिवासियों का जीवन बिलकुल प्राकृतिक है। उदय जी ने अपनी रचनाओं के द्वारा आदिवासियों को प्रकाश में लाने का सफल प्रयास किया। उनकी चर्चित लंबी कहानी 'पीली छतरीवाली लडकी' के नायक राहुल के मामा इनकी तारीफ करते हुए इन हाशिएकृत लोगों को प्रकाश में लाने की जरूरत को समझाने की कोशिश करते हैं। उनके अनुसार आदिवासी मासूम लोग प्रकृति के नाश किये बिना प्रकृति के साथ मिलकर प्रकृति की पुष्टि के लिए सहयोग दे रहे हैं। राहुल के मामा की मान्यता है कि आदिवासियों ने भारत के निर्माण के लिए अनन्य योगदान दिया। लेकिन हमारे इतिहास लेखकों ने उनकी उपेक्षा की। इसकी ओर उदय जी

---

1. उदय प्रकाश - अपनी उनकी बात - पृ. 142-143

ने इशारा किया है - "....अंग्रेज़ों के खिलाफ लडाई सिर्फ ब्राह्मण, ठाकुरों, बनियों या हिन्दु-मुसलमानों ने लडी है, अब तक के इतिहासकारों ने जिन नायकों का निर्माण किया था वे सब इन पृष्ठभूमियों के थे... बहुत प्रामाणिक दस्तावेज़ों और तथ्यों के साथ, सिंहभूमि और झारखण्ड समेत छोटा नागपूर बेल्ट के उन आदिवासी नायकों की संघर्ष की कथा कही गयी थी जिन का महान त्रासदी भरा नायकत्व उन तक सिर्फ बिहार, उडीसा और बंगाल के पिछडे आदिवासी इलाके में प्रचलित 'फोकलोर' में ही मौजूद था।"[1] राहुल केमस्ट्री में पोस्टग्राडुवेट है। लेकिन मामा से प्रेरित होकर मानव विकास के विभिन्न परिणाम एवं जाति नसलों को समझने के लिए पुनः आथ्रोपोलोजी लेकर पढने लगता है। राहुल के मामा भारत के इतिहास को नये ढाँचे पर तैयार करने की ओर इशारा करते हैं। जिससे पहले इतिहास द्वारा उपेक्षित वर्ग इसके अंतर्गत जगह पा सके। उदय जी कहते हैं - "आदिवासियों की सबसे बडी विशेषता यह है कि उनकी जरूरतें सबसे कम हैं। वे प्रकृति और पर्यावरण को कम से कम नुक्सान करते हैं.... तेल में फ्राइ करना तक वे पसंद नहीं करते। वे प्राकृतिक मनुष्य हैं। इतिहास असल में राजनीतिक दस्तावेज होता है... जो वर्ग, जाति या नस्ल सत्ता में होता है, वह अपने हितों के अनुरूप इतिहास को निर्मित करता है। इस देश और समाज का इतिहास अभी लिखा जाना बाकी है।"[2] इतिहास के अधूरेपन की ओर उदय प्रकाश हमारा ध्यान आकर्षित करते हैं।

---

1. उदय प्रकाश - पीली छतरीवाली लडकी - पृ. 14
2. वही - पृ. 14

3.3.1 आदिवासी स्त्रियों का शोषण

उदय प्रकाश ने अपनी चर्चित कविता 'गेम सेक्चुअरी' में आदिवासी स्त्री के शोषण के बारे में विचार किया है। अनुपूर शहडोल क्षेत्र में घना जंगल है, वहाँ डाक बंगले होते हैं। वहाँ पिकनिक के लिए या मौज मस्ती के लिए अनेक मंत्री और अफसर जाते रहे हैं। कविता में बार-बार चित्रित किया गया है कि पिकनिक मनाने आये अधिकारी लोग वहाँ के संसाधन एवं नियुक्त कर्मचारियों से बुरा व्यवहार करते हैं। उनके द्वारा आदिवासी कन्याओं को जो शोषण हो रहा है उस पर यों प्रकाश डाला जाता है-

"डाक बंगले में जहाँ शिकार के लिये
ठहरे हुए थे नौजवान अफसर
थर्मस में से काफि निकाल-निकाल कर
पीते कहकहाते - ठट्ठ... ठट्ठ....
उई....मी....गाँश अफसरानियाँ करती
खिल्ल... खिल्ल ताश के पत्ते फेंट जाते
x x x x
डाक बंगलों में आदिवासी भील कन्या होनी चाहिए
यहाँ आयें हम तो लगे हमें
कि यहाँ के जनजीवन के एक अंग हैं
पूरा वातावरण बनाना चाहिए
पर्यटकों के लिए गंभीर कला प्रेमी अफसर कहता है गंभीरता से।"[1]

---

1. उदय प्रकाश - रात में हार्मोनियम - पृ. 34

बडे बडे लोग जैसे मंत्री एवं सत्ताधारी लोग मानवीय अधिकार की बातों पर खूब बहस करते हैं। लेकिन प्रवृत्ति तो मानवीयता का हरण है याने कि कथनी एवं करनी में कोई साम्य नहीं है। यहाँ बडे बडे लोगों की कामुकता एवं आक्रामकता पर कवि टिप्पणी करते हैं।

आदिवासी इलाकों में स्त्रियाँ कई प्रकार के शोषण की शिकार हो रही हैं। उदय जी की चर्चित कहानी '....और अंत में प्रार्थना' में आदिवासी स्त्रियों के चरित्र का बयान यों हो रहा है - "टी.वी ढीगर गांव में छह साल पहले आ गया था। लेकिन टी.वी के पर्दे पर दिखाई देनेवाली चीज़ें वहाँ नहीं आई थीं। मैंगी नूडल्स वहाँ नहीं थे, सैमुराइ और अटारी के वीडियो गेम्स नहीं थे। पाम औलिया का केयर सोप नहीं था। वहाँ गार्डेन बरेली की साडी के ज़रिए अपनी छाती, पीठ, कमर और बगलों का चिकना लगापन दिखाती औरतें नहीं थी। वे लडकियाँ नहीं थी जो लिरिल पा पोंड्स लेवेठर सोप के झाग में झरने या शॉवर के नीचे लाखों लोगों के सामने नंगी नहाती थी।"[1] लेकिन कई स्त्रियाँ अशिक्षित हैं। इसलिए उसे धोखा देना आसान है। आदिवासी इलाके में बडे बडे अफ़सर लोग जो कुछ कहते हैं। उसका अनुसरण वे करती हैं। इस प्रकार के शोषण की शिकार होनेवाली अनेक स्त्रियों को उदय जी ने हमारे सामने पेश किया है। ढीगर गाँव में प्रधानमंत्री के संदर्शन के दैरान अनेक कार्यक्रमों का ट्रेनिंग हो रही है। ट्रेनिंग में भी स्त्रियों का शोषण हो रहा है। ट्रेनिंग का नेतृत्व वहाँ के जनसंपर्क विभाग और आदिवासी कल्याण परिषद का

---

1. उदय प्रकाश - ...और अंत में प्रार्थना - पृ. 133-134

अफसर करता है, वह औरत-मर्दों को सही रूप से नाचने का सलाह देता है। अफसर स्त्रियों से कहता है - "पि.एम. के सामने नाचना है। सही नाचेंगे तो दिल्ली घुमाएँगे। बख्शीश मिलेगा। आदिवासी औरत को सख्त हिदायत कि कोई ब्लाउज़ नहीं पहनेगी। ऐसे ही आँचल से दूध को मूँद लेना है। जिसकी छाती ज़्यादा लटक गई है उसे पीछे रहना है।"[1] अर्थात विकास योजनाओं के लिए स्त्री शरीर मनोरंज की उपाधि के रूप में बेचा जा रहा है। शिक्षा की ज़रूरत एवं प्रतिरोधी चेतना को व्यक्त करने की आवश्यकता पर परोक्ष रूप में आह्वान दिया जा रहा है। आदिवासी लोग अपने पुराना जमाना पसंद करता है। कथावाचक होकर उदय जी कहानी में इसका उत्तर देते हैं कि इसकी दो मुख्य वजहों थीं कि एक तो तब जंगल इतने नहीं उजड नहीं था और दूसरी यह है कि आदिवासी समाज में तब सरकार और बाहरी लोगों की इतनी दखलंबाजी नहीं थी।

3.3.2 आदिवासी-विकास परियोजनाओं का खोखलापन

विकास एक अनिवार्य प्रक्रिया है। लेकिन विकास के नाम पर जो षड्यंत्र चल रहा है वह अत्यन्त हीन प्रवृत्ति है। 'और अंत में प्रार्थना' कहानी में विकास योजना के खोखलापन का नंगा चित्रण है। साथ ही साथ आदिवासी विरोध का खुलासा भी है। प्रधानमंत्री जो फिरोजलाल मलकानी के पेपर मिल का शिलान्यास करने के लिए ढीगर गाँव आया हुआ था और जो इस क्षेत्र के मूल निवासी आदिवासियों के उनके घर ज़मीन से उजाडकर उन्हें दूसरी नस्लों की अंतहीन

---

1. उदय प्रकाश - अरेबा-परेबा - और अंत में प्रार्थना - पृ. 217

गुलामी में हमेशा के लिए छोड देने का तंत्र था। उन्हें विस्थापित करने का षड्यंत्र भी था। विकास के परिणाम स्वरूप प्रकृति की अवस्था या आदिवासियों की अवस्था क्या है? इस पर उदय जी चिंतित हैं - "कागज़ का कारखाना कागज़ का उत्पादन करने के लिए ढींगर गाँव के सारे पेडों को खा जाएगा। जंगल उसके लिए रौ मैटीरियल है। कच्चा माल। आसपास के सारे जंगल खत्म हो जाएँगे। पीपल, सागैन, शीशम, सरई, कहुआ, महुआ, कोसम, छिउला कुछ नहीं बचेंगे। जंगलों पर निर्भर आदिवासी शहरों में बननेवाली इमारतों या ऐसी ही किन्हीं दूसरी परियोजनाओं में सस्ती दिहाडी और फर्जी मास्टर रोल पर काम करने वाले लेबर बन जाएँगे। अगरिया, बंसोर, मिम्मा झीगर आदि जातियों की पारंपरिक दस्तकारी का कुटीर उद्योग खत्म हो जाएगा।"[1] प्रकृति का विनाश पूँजीपतियों के कागज के कारखानों के सामने बेकार है। प्रधानमंत्री भी पूँजीपतियों के साथी हैं, वे गाँव के मुखिया जैसा पोशाक धारण करते हैं और उन्हें उनके मुखिया, उनके भले-बुरे, हित-अहित की बात सोचनेवाले तमाम आपदाओं से बचानेवाले के रूप में खुद को प्रस्तुत करते हैं। स्पष्ट है कि भारत जैसे विशालतम जनतंत्र का प्रधानमंत्री वास्तव में किस वर्ग से ताल्लुक रखता है और इसकी प्राथमिकताएँ और चिंताएँ क्या हैं? प्रधानमंत्री अमेरिका के विश्व बैक के कर्ज से बनानेवाले कागज़ के कारखाना के लिए हमारी धरती को बचेता है। आदिवासी इलाके के इस छद्म विकास से जो कुछ नष्ट हो रहे हैं इसके बारे में उदय जी चिंता दर्ज करते हैं। अर्थात प्रधानमंत्री की प्रतिबद्धता

---

1. उदय प्रकाश - अरेबा-परेबा - और अंत में प्रार्थना - पृ. 236

दरअसल पूँजीपति जैसे दूसरे नस्लों वर्गों के साथ है, वही वर्ग आज प्रतिष्ठित हो रहा है।

आदिवासियों का शोषण अभी भी ज़ारी है। भारत की सरकारों ने आदिवासियों के लिए कोई भी पद्धति नहीं अपनायी। उनकी शिक्षा एवं स्वास्थ्य की सुविधा को आगे बढाना चाहिए। ये दोनों सदियों से उचित रूप में न मिलने के कारण वे ज़रूर हथियार उठायेंगे। यह प्रतिरोध क्या विकास का विरोध है या जरूरतों के लिए।

3.4 निष्कर्ष

उदय प्रकाश की रचनाओं में हाशिएकृत लोगों की समस्यायें भी दर्ज हैं। उदय जी के मुताबिक - "मैं स्वयं और मेरी रचनाओं के ज़्यादातर पाठक अपने समय समाज और यथार्थ के हाशिए के लोग हैं। समय और समाज की जो केन्द्रिय सत्ताएँ हैं, यानी इस व्यवस्था की जो घुरी है। उसकी परिधि और उसके भी बाहर के लोग बाग। एक तरह के सबआर्ल्टन जीवन और अनुभव के लोग।"[1] अर्थात हाशिएकृत को वाणी प्रदान करना उनकी रचनाओं की सार्थकता है।

❖❖❖

1. उदय प्रकाश - अरेबा-परेबा - भूमिका (viii)